* श्री श्री गौरांग महाप्रभुर्जयति *

श्री गदाधर भट्टजी की

वाणी

(संशोधित संस्करण)

महामहिम

श्री श्री गदाधर भट्ट जी विरचिता

संग्रहकर्ता—

श्री कृष्णदास बाबा

(कुसुम सरोवर वाले)

प्रकाशक—

राधेश्याम गुप्ता बुकसेलर

पुराना शहर वृन्दावन
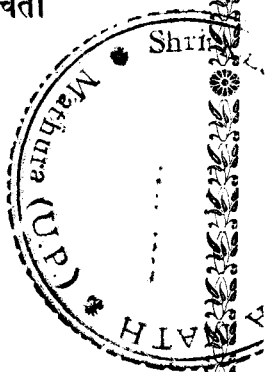
तीय संस्करण १००० | विहार पञ्चमी संवत् २०१५ वि० | न्यौछावर एक रुपया

श्री वृन्दावन से प्रकाशित रासलीलाएँ

१–गुड़िया, दुलरी लीला =)॥
२–कृपा कटाक्ष स्तोत्र =)
३–अनुराग लीला =)
४–स्वप्न लीला ।)
५–उद्धवलीला भ्रमरगीत ।–)
६–रासलीला के पद =)
७–वृन्दावन के सवैया ।–)
८–महादेवलीला =)॥
९–रासबिहारी के रसिया =)
१०–होरी के रसिया =)
११–बनजारो लीला =)
१२–गोरे ग्वाल लीला =)
१३–झूलन लीला के पद =)
१४–परस्पर मानलीला –)॥
१५–हाऊलीला माटी खा० –)
१६–वृन्दावन रहस्य विनोद =)
१७–वन्शी चोरी लीला ≡)
१८–नौका लीला =)
१९–माखन चोरी लीला ≡)
२०–मणि खम्भ लीला ≡)
२१–मुंदरी चोरी लीला –)
२२–स्याम सगाई लीला ≡)
२३–गोप देवी लीला ≡)
२४–ऊखल बंधन लीला ≡)
२५–रास छद्म विनोद लीला ।=)
२६–कालीदह लीला –)
२७–सांझी लीला =)
२८–रासलीला की मांझ ≡)

१. **रसिया रासलीला**(प्र० भाग) कल्याणप्रसाद शर्मा 'किशोरी' कृत ॥)
२. **रसिया रस विहार**–श्री स्वामी कुमरपाल जी कृत ।–)
३. **रसिक पदावली**–श्री महन्त कमलदास जी द्वारा संग्रहीत १॥)

प्राचीन बाणी (ब्रज साहित्य)

१. **केलिमाल**–(श्री स्वामी हरिदास जी) १)
२. **श्रीहित सुधा सिन्धु**–(श्रीहित हरिवंश जी) कृत चतुरासी आदि १)
३. **श्रीराधा सुधा-निधि**–(,, ,,) १॥।)
४. **श्री वृन्दावन महिमामृतम्**–(श्री प्रबोधानन्द जी कृत) शतक एक से दस तक तीन खंडों में २॥=)

पता–**राधेश्याम गुप्ता बुकसेलर, पुराना शहर वृन्दावन।**

मुद्रक–लाला छाजूराम रानीलावाले, श्री सर्वेश्वर इलै० प्रेस, वृन्दावन।

दो शब्द

श्री श्री गदाधरभट्टजी का स्थान सरस-ब्रज-रस-माधुरी के सुधा सागर में छके हुए अनन्य रसिक भक्तों तथा कवियों में बहुत ऊँचा है। आप परोपकार की मूर्त्ति, गुणों के सागर, सबके प्रिय तथा श्रीमद्भागवत के अनुपम रंगीले रसीले बक्ता थे। आप श्री गौड़ेश्वर सम्प्रदायानुयायी थे। आपका परिचय भक्तमाल में श्रीनाभाजी ने इस प्रकार दिया है—

गुन निकर गदाधर भट्ट सबहिन को लागे सुखद।
सज्जन, सुहृद, सुशील वचन आरज प्रति पालय॥
निर्मत्सर, निहकाम कृपा करुणा के आलय।
अनन्य भजन दृढ करनि धरचौ बपु भक्तनि काजै॥
परम धरम कौ सेतु विदित वृन्दावन गाजै।
भागौत सुधा वरषे बदन काहू कौ नाहिन दुखद॥
गुन निकर गदाधर भट्ट अति सबहिन को लागे सुखद।

भक्तमाल के टीकाकार श्री प्रियादास जी ने कवित्त छन्दों में विस्तार पूर्वक श्री भट्टजी की रहनी गहनी पर इस प्रकार प्रकाश डाला है—

'श्याम रंग रंगी' पद सुनिके गुसांई जीव,
पत्र दे पठाये उभै साधु बेगि धाये हैं।
रैनि बिन रंग कैसे चढ़चौ अति सोच बढ़चो,
कागद में प्रेम मढ़चो तहां लेके आये हैं॥
पुर ढिग कूप तहाँ बैठे रस रूप लगे,
पूछिवे को तिन्हीं सों नाम लै बताये हैं।

रह्यो कौन ठौर सिरमौर वृन्दावन नाम,
सुनि मुरछा है गिरे फेर प्रान पाये हैं ॥१॥
काहू कही भट्ट श्री गदाधर जू एई जानौ,
मानौ उही पाती चाहे फेरि के जिवाये हैं।
दियो पत्र हाथ लियो सीस सौं लगाय चाय,
बाँचत ही चले वेगि वृन्दावन आये हैं॥
मिले श्री गुसांई जू सों आखें भरि आईं नीर,
सुधि न शरीर धरि धीर वहीं गाये हैं।
पढ़े सब ग्रंथ संग नाना कृष्ण कथा रंग,
रस की उमंग अंग-अंग भाव छाये हैं॥२॥

आपने प्रथम अपने घर में ही "सखी हौं श्याम रंग रंगी, देख बिकाय गई यह मूरत सूरत माँहि पगीं।" यह पद बनाया, जिसकी प्रसिद्धि सर्वत्र फैल गई थी। श्री वृन्दावन में किसी साधु के मुख से इस पद को सुनकर श्री श्री जीव गोस्वामी पाद ऐसे चकित और मोहित हुए कि आपने एक पत्र यह लिखा कि—

अनाराध्य राधापदाम्भोजरेणु—मनाश्रित्य वृन्दाटवीं तत्पदाङ्काम्।
असम्भाष्य तद्भावगम्भीरचित्तान् कुतः श्यामसिन्धो रसस्यावगाहः॥

अर्थात् जिसने श्री राधिका के चरण कमल रज की आराधना नहीं की तथा जो श्री राधाचरण कमलाँकित श्री वृन्दावन के आश्रित नहीं हुआ और जिसने राधा भाव रस से गम्भीर चित्त वाले रसिकों का संग नहीं किया वह कैसे श्री श्याम रस-रूप के महा समुद्र में गोता लगा सकता है?

इस पत्र को लेकर दो साधु श्री भट्टजी महाराज के पास आये, वे उस समय एक कूप (कूआ) के ऊपर बैठे दाँतुन कर रहे थे। वे दोनों

साधु उनसे ही पूछने लगे कि गदाधर भट्टजी कहाँ पर रहते हैं? भट्टजी महाराज ने पूछा कि आप कहाँ रहते हैं। सन्तों ने उत्तर दिया 'सिर मौर श्री वृन्दावन धाम में। श्री वृन्दावन धाम का नाम सुनते ही भट्टजी प्रेमावेश से मूर्च्छित हो गिर पड़े। आप की दशा देखकर वे सन्त बड़े आश्चर्यान्वित हुए। उन संतों से किसी ने कहा कि यही गदाधर भट्टजी हैं। तब संतों ने उनको प्रणाम करके वह पत्र दिया। भट्टजी खड़े हो गये। पत्र ले सिर और नेत्रों से लगाया, प्रेमानन्द से पढ़ा और वहाँ से सीधे वृन्दावन को चल दिये वहाँ श्री जीव गोस्वामी जी से मिलकर आपने श्री भागवत रस का आस्वादन किया। उस समय श्रीधाम वृन्दावन में गौडीय आचार्यों का पूरा आधिपत्य था तथा श्री गोविन्द, गोपीनाथ, मदनमोहन, दामोदर, राधारमण आदिक वृन्दावन के वैभव रूप भगवद् विग्रहों का प्राकट्य हो चुका था। भट्टजी के मधुर भाषण का श्रोताओं पर बड़ा प्रभाव पड़ता था। बहुत लोग संसारी सुख को तुच्छ समझकर भागवत रंग में रंग जाते तथा सहज में ही मूर्च्छादिक अष्ट सात्विक भाव उदय हो जाते थे। श्रीमन् महाप्रभु गौरांगदेव के परिकर प्रधान छै गोस्वामियों में एकतम श्रीपाद रघुनाथ भट्ट गोस्वामी जी, जो उस समय भागवतादि वैष्णव शास्त्रों के धुरन्धर विद्वान् तथा अलौकिक वक्ता थे, उस समय वृन्दावन में विराजमान थे। आपने निज शिष्य जयपुर के राजा मानसिंह जी को कहकर श्री गोविन्द देव जी का मंदिर लाल पत्थर से बनवाया था जिसे पीछे औरंगजेब ने तुड़वा दिया। गदाधर भट्टजी श्रीपाद रघुनाथ भट्ट जी के अनुगत शिष्य थे। कुछ विद्वानों ने गदाधर भट्टजी को श्रीमन्महाप्रभु के शिष्य एवं उनको भागवत सुनाने का उल्लेख किया है। डाक्टर हजारीप्रसाद द्विवेदी आदिक विद्वानों ने

उनका अनुसरण करके ऐसा ही लिख दिया है। ब्रजमाधुरी सार के पृष्ठ ७५ पर श्रीयुत वियोगी हरि ने भी ऐसा ही कहा है। यह उनका सर्व प्रकार से भ्रम ही मालूम होता है। क्योंकि महाप्रभु के अन्तर्ध्यान होने के बहुत समय पश्चात् श्रीजीव गोस्वामी जी वृन्दावन में आये थे। उनके साथ भट्टजी का सम्पर्क भक्तमालादि ग्रन्थों में उल्लेख है। अतः भट्टजी को महाप्रभु के शिष्य कहना निराधार है। श्रीयुत गदाधर पण्डित गोस्वामी महाप्रभु के प्रधान परिकर थे एवं उनको भागवत सुनाते थे ऐसा गौडीय ग्रंथ में सर्वत्र उल्लेख है। उन गदाधर पण्डित गोस्वामी जी के स्थान पर भ्रम से गदाधर भट्टजी का नाम हो गया है। वस्तुतः गदाधर भट्टजी महाप्रभु के शिष्य नहीं थे। अस्तु, एकबार भट्टजी के यहाँ एक चोर आया, उसने घर की समस्त संपत्ति लेकर एक बहुत बड़ी गठरी बाँधी पर उसे उठाने में वह असमर्थ हुआ। भट्टजी जो यह सब लीला देख रहे थे, चोर के पास आये और चुपचाप उसे गठरी उठादी। चोर पर आपकी दया का बड़ा भारी प्रभाव पड़ा, वह आपके चरणों में लोट गया और शिष्य हो गया। सच है महानुभावों के चरित्र इसी प्रकार लोकोत्तर होते हैं।

श्री भट्टजी के सेवित विग्रह श्री मदनमोहन जी, राधावल्लभ जी के मन्दिर के सामने भट्टजी मुहल्ला में एक मनोहर मन्दिर में विराजमान हैं, भट्टजी के वंशज गोस्वामी गण बड़े अनुराग से उन (मदनमोहन जी) की सेवा करते हैं। वहाँ परम समारोह के साथ नित्य प्रति, विशेष. करके झूलन, होरी, रास आदिक दिवसों में समाज (पदों से लीलागान) होता रहता है। भट्टजी की वंश परम्परा में अब तक प्रायः बड़े-बड़े भागवत के प्रसिद्ध वक्ता हो गये हैं और हैं इनके घराने में श्री गोवर्द्धन भट्टजी हो गये हैं जिन्होंने कि अपनी

वाणी-मन्दाकिनी से त्रिजगत् आप्लावित कर दिया था। उनके द्वारा विरचित मधुकेलिवल्ली नामक ग्रन्थ की श्लोकावली देखकर पण्डितों-के मस्तक घूर्णायमान हो जाते हैं। वह ग्रन्थ श्री रूपसनातन स्तोत्र तथा राधाकुंडस्तव इन दोनों ग्रन्थों के साथ "श्रीगोवर्द्धन भट्ट ग्रंथावली नाम से प्रकाशित हो गया है। भट्टजी के शिष्य बल्लभरसिक जी ने भी भाषा छन्दों से अनेक पदों की रचना की थी। इस प्रकार के यमक का प्रचुर प्रयोग अन्यत्र भाषा पद्यों में कहीं पर देखने में नहीं आया। वह सब "वल्लभरसिक जी की वाणी" नाम से प्रकाशित हो गये हैं।

भट्जी के शिष्य व पुत्र रसिकवल्लभ जी हुए, जिन्होंने प्रसिद्ध "प्रेमपत्तन" नामक मनोहर सरस ग्रन्थ की रचना की। यह ग्रंथ भी वनारस संस्कृत सीरिज से प्रकाशित हो गया है।

श्री भट्टजी संस्कृत के महा धुरन्धर विद्वान् होते हुए भी ब्रजभाषा साहित्य में अत्यधिक कुशल थे। उनके अधिकांश पद संस्कृत में रचे हुए मिलते हैं। उनके द्वारा संस्कृत में बने हुए पदों में उपदेश, श्री यशोदाजी की वन्दना, नन्दब्रज के परिकर वृन्दों का वर्णन, यमुना जी की महिमा का वर्णन, हरि चरणों की वन्दना आदिक अत्यन्त सरस तथा यमक अनुप्रास उपमादि अलंकारों से जड़ित परम आस्वादनीय हैं। इनके द्वारा विरचित श्री राधागोविन्द देव का योगपीठ वर्णन भी रसिक उपासक जनों के लिये परम अनुभवनीय वस्तु है। ब्रजभाषा में रचित परिहासात्मक "गाली" अत्यन्त भावपूर्ण परम मनोहर है। इस प्रकार इस ग्रन्थ में लगभग संस्कृत तथा ब्रजभाषा के मिलकर ८५ पद संगृहीत हैं। मैंने पहले नाना स्थान से जहाँ-तहाँ हस्तलिखित पुस्तक देखकर इन पदों को एकत्र संचय करके सम्वत् २००० में जयपुर

से प्रकाशित किया था। उस समय श्री गदाधर भट्टजी के वंशज श्री गोवर्द्धन भट्टजी उपनाम छोट्टनलाल जी महोदय के पास से एक संगृहीत हस्तलिखित पुस्तक की कापी मुझे प्राप्त हुई थी। भट्टजी के द्वारा विरचित बहुत फुटकर पद यत्र-तत्र मिलते हैं। उन सबको एकत्रित करके समयान्तर में प्रकाशित करने की प्रबल इच्छा है। इस वाणी पुस्तक का पहला संस्करण निःशेष रूप से वितरण हो गया है। प्रेमी जनता की काफी माँग भी आ रही है। अतः मेरी सम्मति से श्रीमान् राधेश्याम गुप्ता, पुस्तक बिक्रेता (वृन्दावन पुराना शहर निवासी) ने इसका सम्पूर्ण प्रकाशन भार ले लिया है। प्रभुसे प्रार्थना है कि आप श्रीमान् जी को अनुग्रहीत करें।

गुरु गौरांग कृपा प्रार्थी—

कृष्णदास

(कुसुम सरोवर वाले)

मथुरा

गोपाष्टमी

(संवत् २०१५)

नम्र निवेदन

इस ग्रन्थ रत्न का प्रथम संस्करण १५ वर्ष पहले छपा था। जो प्रायः पांच-छै वर्ष से अप्राप्त था। यह दुर्लभ ग्रन्थ प्रेमी जनता की विशेष माँग के कारण संशोधित रूप में छप गया। इसी प्रकार दुर्लभ ग्रन्थ रत्न (**श्री सूरदास मदनमोहन जी की वाणी**) का भी शीघ्र ही प्रकाशन होने वाला है।

विनीत प्रकाशक—

श्री गदाधर भट्ट जी की वाणी के पदों की सूची

* श्री श्री गौरहरिर्जयति *

❀ श्री गदाधरभट्टजी की वाणी ❀

अथ योगपीठ

श्री गोविन्द पदारविन्द सीस सिरनाऊं ।
श्री वृन्दावन विपिन मौलि वैभव कछु गाऊं ॥१॥
कालिन्दी जहाँ नदी नील निर्मल जल भ्राजै ।
परमतत्व वेदान्त वेद्य इव रूप विराजै ॥२॥
रक्त पीत सित असित लसित अम्बुजवन सोभा ।
टोल टोल मदलोल भ्रमत मधुकर मधुलोभा ॥३॥
सारस अरु कलहंस कोक कोलाहल कारी ।
अगनित लच्छन पच्छि जात कहि नहि मति हारी॥४॥
पुलिन पवित्र विचित्र रचित नाना मनि मोती ।
लज्जित ह्वै शशि सूर निरखि निसिवासर जोती ॥५॥
कंचन कलित गिलाइ लाइ बांधे मनि कूलन ।
तीर तीर चतुर सुचारु नाना द्रुम मूलनि ॥६॥
नव नग सोभा विविध भाँति नव पल्लव पत्रा ।
रंग रंग के फूल मनहुं विधि निर्मित चित्रा ॥७॥
कल कलधौत लता पतान तिनसौं लपटाने ।
वर पराग के पुञ्ज कुञ्ज परत न पहिचाने ॥८॥
कहुं कपूर पराग कहूं कुंकुम के पंका ।
कहुं फटिक स्थल विमल मनहुं अकलंक मयंका॥९॥

कहुं अमृत जलभरे विपुल पद्माकर ओडे ।
मरकत धसी किरन मनौ दुर्वांकुर बौडे ॥१०॥
इहि विधि चिंतामनिन भूमि संतत तहँ सोहै ।
षटरितु सेवत निच कहत उपमाको को है ॥११॥
जहाँ केकी कुल निच तहाँ पिक पंचम गावत ।
परत भृङ्ग उपङ्ग सबद उघटत पारावत ॥१२॥
कीर प्रशंसा करत झरत निर्झर मृदङ्ग धुनि ।
रीझ रीझ सिर धुनत वृच्छ संगीत रीत सुनि ॥१३॥
थिरचर मन उल्लास विलास विविध तहँ दरसै ।
मंद पवन वस परसि लता कुसुमांजुलि बरसै ॥१४॥
नित्यानन्द कदम्ब केलि वृन्दावन सोभा ।
कोटि कोटि सुरराज रंक ह्वै लागत लोभा ॥१५॥
कल्पद्रुमन की छांह माह मनि मंडप भारी ।
जगमग २ जोति होति सोभा सुखकारी ॥१६॥
ता मंडप मह योगपीठ पङ्कज रुचि लागी ।
ताके मन में उदय होत जो कोऊ बड़भागी ॥१७॥
ताके पत्र विचित्र सहस्र मध्य किंजल्कै ।
पद्मराग की भांति अग्र मुक्ता मणि झलकै ॥१८॥
कनक बरन कर्निका कील बज्रन की सोहै ।
मन्त्र दसाच्छर रूप कहन महिमाको को है ॥१९॥
वनिता जनगन कोटि कोटि संतत ता माहीं ॥
उपमा को रति रमा उमा रम्भादिक नाहीं ॥२०॥

घरन घरन अम्बर सुरंग कंचुकि तन गाढ़ी ।
मंजन अंजन तिलक हार सोभा सुठि बाढ़ी ॥२१॥
अंग अंग सोभा समूह श्रेणी रुचि बाढ़ी ।
मनहुँ माधुरी सिंधुहुते अबहीं मथि काढ़ी ॥२२॥
सुन्दर नव युवराज विराजत तिनहि मंझारी ।
रूप अनूपम कथन काज सरसुति पचिहारी ॥२३॥
नील जलद तन स्याम धाम अभिराम पीतपट ।
सिखि सिखंड सेखर ललाट रहीं छूटि अलकलट ॥२४॥
विविध सुदेस सुन्दर सुरंग कुंकुम तमाल दल ।
ललित लोल डोलत कपोल बिंवित मनि कुंडल ॥२५॥
भृकुटि भंग लघु लघु तरंग लोचन सुकोकनद ।
चपल चारु चितवनि चिताइ गत होत मदन मद ॥२६॥
शुकनासा मुक्ता प्रकाश उपमा मन मेरे ।
मनहु असुर गुरु आय अंक बैठ्यौ विधुकेरे ॥२७॥
अधर मधुर अरुनिमा जोर बंधूक न पावै ।
विद्रुम बिंब जवा प्रसून ऊनता जनावै ॥२८॥
मुक्ता हीर अनार कुंद दंतन पर वारौं ।
कंबुकंठ कौस्तुभ मयूख रुचि कहत न पारौं ॥२९॥
गज सुंडाकृति बाहुदंड-केयूर रहे वनि ।
मधि हीरा षट-कौन कौन मनि कहै और गनि ॥३०॥
पहोँचनि पहोंची वर जराय मुद्रिका रही फवि ।
करपल्लव नख जोति जात नक्षत्र पंक्ति दवि ॥३१॥

कुंददाम वनदाम दामगुंजा मनिको उर।
तार हार विस्तार चारु सुभ ढरत हिये पर ॥ ३२ ॥
स्तन दच्छिण श्रीवत्स वाम सोहै श्रीरेखा।
मधि चौकी की चमक चाहि॰ गृह थकै असेषा ॥ ३३ ॥
त्रिवली वलित रोमावलि नाभि आवर्त्त समाना।
चलदल दल आकार उदर घटना मन माना ॥ ६४ ॥
चित्रित अंग पटीर कटीतट घटी सुहाई।
मंद पवन वस थरहराति प्रमुदा मधि आई ॥ ३५ ॥
मनि किंकिनि गुन तड़ित दामसम बनी नितंबन।
उरू जानु जंघा सुगुल्फ सोभा अवलम्बन ॥ ३४ ॥
नूपुर रव जन झननकार गुरु सिष्य हंसकुल।
बार बार अभ्यास करत हारे न लही तुल ॥ ३७ ॥
जल कमल स्थलकमल जीति श्री वस करि राखी।
कविवर वचन प्रमाण मानि बोलत है साखी ॥ ३८ ॥
मुरलीधर वरअधर धरे मुरली अति नीकी।
नादामृत बरसाय हरत सुधि-बुधि सबही की ॥ ३६ ॥
वाम भाग सौभागसीम श्रीराधा रमनिमनि।
ताके नव-नव प्रीति राग रहे पियतन मनसनि ॥ ४० ॥
अहिकुल अलिकुल वरहिकुल केस वेस लखिलाजि।
रहे रसामहि कमलमहि निरजन वन महि भाजि ॥ ४१ ॥
वदन सदन आनन्द चंद चारुता लजानी।
नैन मैन सर पैन भौंह धनुही जनु तानी ॥ ४२ ॥

मृगमद तिलक ललाटपट तार्टक श्रवन वनि ।
खुलि खुटिला झुलमुली अलक झलमलत महामनि ॥४३॥
नासा मोती अधर भासता सित थरहरई ।
दसन दाडिमी बीज मंजिता बोल मुखरई ॥ ४४ ॥
चिबुक चारु रुचिरुचिर चकित प्रीतम छवि जोहै ।
स्यामविंदु सुखकन्द–नदनन्दन मन मोहै ॥ ४५ ॥
नील सार सोभा अपार वेनी बनी भारी ।
गौरगात गाती सुजात मोहित रतनारी ॥ ४६ ॥
कंठश्री मुक्तान माल चौकी चमकंती ।
भुज मृणाल नवलाल वलित वलयन की पंक्ती ॥ ५७ ॥
मनिमुद्रिक केयूर कमल करपल्लव राते ।
नखर-सिखर मानिक्य स्याम अन्तर अरुझाते ॥ ४८ ॥
रसना रसद निनाद वाद मनमथसौं ठान्यो ।
रंभाखंभ समान जंघ सुन्दर मनमान्यो ॥ ४९ ॥
चरन कंज मंजीर हंस कूजित समबाजै ।
नखमानिक मद जीति रागतल अधिक विराजै ॥ ५० ॥
यह विधि युगलकिशोर जोर संतत तँह सोभै ।
भावसहित भावना करत कहि को नहि लोभै ॥ ५१ ॥
जो इहि विधि निसि द्योस लचत बैठे अरुठाढ़े ।
करहि विचार बिकार और तौ कत मनबाढ़े ॥ ५२
ध्यानानन्द मकरन्दसार जिनके मनमाते ।
भवदव दहन समूह तिनहि लागत नहिं ताते ॥ ५३

श्रीवृन्दावन योगपीठ गोविन्द निवासा ।
तहाँ (श्री) गदाधर चरन सरन सेवा की आसा ।' ५४ ॥

॥ इति श्री गदाधरभट्टजी कृत योगपीठ वर्णन सम्पूर्णम् ॥

उपदेश पद नं० १

मुंच रे मुंच माया सुखे यत्नं ।
मृगय गोकुलकुलाधीशकुलरत्नं ॥ १ ॥
मूढ मायात दुराशा पिशाची वशे ।
मित्र मज्जय मनः कृष्णलीलारसे ॥ २ ॥
किं लब्धं त्वया कृपण मन रंजने ।
किमिति रमसे न निजभक्त-भयभंजने ॥३॥
हरिविमुखसंगमे किं भजसि रागं ।
वरय हरिदासपदपंकजपरागं ॥ ४ ॥
कलय चेतसि चिरं नीलघनसुन्दरं ।
पीतवसनं सुभगनागरपुरन्दरं ॥ ५ ॥
गोपगणवेष्टितं नैंचिकीचारकं ।
सुरसुखद चेष्टितं दनुजकुल मारकं ॥ ६ ॥
द्विषामपि मुक्तिदं मुक्तिसेवित पदं ।
वंशिकाविवश गोपी जनानन्ददं ॥ ७ ॥
मावृथा चिन्तनं मा वृथालापं ।
कुरुगदाधर जहिहि मनसि परितापं ॥ ८ ॥

रागविभास पद नं० २

कबै हरि, कृपा करिहौ सुरति मेरी ।

और न कोऊ काटन कौं मोह बेरी ॥ १ ॥
काम लोभ आदि ये निर्दय अहेरी।
मिलि कै मन मति मृगी चहुँघा घेरी ॥ २ ॥
रोपी आइ पास पासि दुरासा केरी।
देत वाही में फिरि फिरि फेरी ॥ ३ ॥
परी कुपथ कंटक आपदा घनेरी।
नैक ही न पावति भजि भजन सेरी ॥ ४ ॥
दंभ के आरंभ ही सतसंगति डेरी।
करै क्यों गदाधर बिनु करुना तेरी ॥ ५ ॥

विनय के पद नं० ३

कहा हम कीनो नरतन पाइ।
हरि परितोषण एको कबहुँ बनि आयो न उपाइ ॥ १ ॥
हरि हरिजन आराधि न जानें कृपण वित चित लाइ।
वृथा विषाद उदर की चिंता जनमहि गयो विताइ ॥ २ ॥
सिंह त्वचाको मढ्यो महापशु खेत सबन को खाइ।
ऐसे ही धरि भेष भक्त को घर-घर फिरयो पुजाइ ॥ ३ ॥
जैसें चोर भोर के आयें इत चितवत वितताइ।
ऐसे ही गति भई गदाधर प्रभु किन करहु सहाइ ॥ ४ ॥

ब्रज जनसम्बन्धि पद (राग रामकली) पद नं० ४

दधि मथति नंद नरिंद रानी करति सुत गुन गान।
नील नीरद अंग दिव्य दूकूल बर परिधान ॥
केस कुसुमनि किरनि मणिताटंक झलकत कान।

स्वेद-कन-गन वदन बिधु पर सुधा बिंदु समान ॥
नेत करषत हरष बरषत वलय किंकिनि कान ।
पय पयोधर श्रवत चातक कृष्ण पिवत निदान ॥
सहसु आनन कहि सकै नहिं जासु भाग्य बखान ।
जगत वंद्य गोविन्द माता गदाधर करि ध्यान ॥

पद नं० ५

वन्दों जशोदा पद कमल ।
जिनहिं चिंतत जाहि मिटि कलिकाल के सब समल ॥
ज्ञान अरु विज्ञानयुत तिनि ध्यानहूँते दूरि ।
ताहि जौ लै गोद बैठति अंग-धूसर धूरि ॥
सभा में कुरुराज की रिषिराज कियो बखान ।
कमल-भव कमलालया भव नहिन महिम समान ॥
जगत-बंध विमोक्ष-कारण जासु नामाभास ।
सोइ डोलतु भजे जाके बाँधिबे के त्रास ॥
कृष्ण चातक हेत जाकी पयोधर पयवृष्टि ।
गदाधर वलि जातु चाहत कृपा कोमल दृष्टि ॥

पद नं० ६

जय श्री गोकुलदेवि यशोदे । जीवातुक हरि बाल विनोदे ॥
बन्धविमोचन वन्धनदक्षे । कृत लोकत्रय रक्षक रक्षे ॥
सतत विहित विश्वंभर भरणे । कृतकलिमल हरतनु मलहरणे ॥
स्तन्यामृत सन्तर्पित कृष्णे । कृष्णाननमधुरि मणि तृष्णे ॥
उत्संगारोपित जगदयने । अंजन चितनिरंजन नयने ॥

दिव्य दुकूलावृत मृदु देहे । रुचिरञ्जित गोकुलपति गेहे ॥
अपराधिन्यपि क्रोधविहीने । करुणामृतवर्षिणि मयि दीने ॥
कमलभवादि सुदुर्लभ भाग्ये । त्रिभुवन विदित महासौभाग्ये ॥
वितर गदाधर मनुनिजदास्यं । भावय मे श्रुतिततिभिरुपास्यं ॥

नन्दजी के पद नं० ७

वन्दों नन्दजू के पाइ ।
अखिल लोक अधीस जाकी हैं चराचत गाइ ॥
निगमसार विचार दुर्गम उमापति विश्राम ।
लह्यौ जाके नाम तें तिंहि नन्दनन्दन नाम ॥
पवन पावक इन्दु अनिमिष सूर अज्ञा करत ।
सो प्रभु जाकी पीठि पादुक लै लै आगै धरत ॥
जासु के सनबंधतें भवबन्धतें निस्तार ।
तासु के कटि दाम को नहिं और छोरनहार ॥
नटति मायानटी भृकुटी भाइ सकति न टारि ।
ताहि जाके गाँमउ की चुटकनि नचावहि नारि ॥
और मम सम दीन उनि सम नाहि और उदार ।
क्यौं न करत गदाधरहि निजद्वार को परिचार ॥

पद नं० ८

वन्दे नंद - व्रजजन - वृन्दं । कृष्ण - प्रेमलता - मृदुकन्दं ॥
कर्त्तुं कृष्णकलानिधि धयनं । चारु चकोरी कृत निजनयनं ॥
कृष्ण - गुणानुकथन मविरामं । विदधदपार सुखै गत यामं ॥
जीवातुक निभनन्द - तनूजं । आगम तंत्र प्रकाशित पूजं ॥

दनु तनु-जानामपि भवतरये । प्राण धनादि यदीयं हरये ॥
हरि रपिदृष्ट्वा विषमासारं । अकृत यदर्थं शैलोद्धारं ॥
अपिवदनलमपि कृत तत्कदनं । प्राविशदघ दनुजाधम वदनं ॥
यत्पद - रजसा - मभिषेकार्यं । लिप्सा समजन्यधिका कार्यं ॥

बधाई के पद (राग मारु) नं० ९

आज कहूँ ते या गोकुल में अद्भुत बरखा आई हो ।
मणि गण हेम हीर धारा की ब्रजपति अति झर लाई हो ॥
बानी बेद पढ़त द्विज दादुर हिये हरखि हरियारे हो ।
दधि-घृत नीर चीर नाना रंग बहि चले खार पनारे हो ॥
पटह निसान भेरि सहनाई महा गरज की घोरें हो ।
मागध सूत वदत चातक पिक बोलत बंदी मोरें हो ॥
भूषन वसन अमोल नंदजू नर-नारिन पहराये हो ।
शाखा फल-दल-फूलन मानों उपवन झालर लागे हो ॥
आनन्द-भरी नाचत ब्रजनारी पहरे रंग रंग सारी हो ।
वरन वरन बादरन लपेटी विद्युत न्यारी न्यारी हो ॥
दरिद्र दवानल बुझे सबन के जाचक सरोवर पूरे हो ।
बाढी सुजग सुजस की सरिता दुरित तीर तरु चूरे हो ॥
उल्हयो ललित तमाल बाल एक भई सबन मन फूल हो ।
छाया हित अकुलाय गदाधर तक्यो चरन को मूल हो ॥

ध्रुपद नं० १०

श्री गोविंद - पद - पल्लव सिर पर विराजमान,
कैसे कहि आवै या सुख को परिमान ।

ब्रज नरेस देस बसत कालानल हू न त्रसत,
विलसत मन हुलसत करि लीलामृत पान ॥
भीजे नित नयन रहत प्रभु के गुण ग्राम कहत,
मानत नहिं त्रिविध ताप जानत नहिं आन ।
तिनके मुख कमल दरस पावन पद रेनु परस,
अधम जन गदाधर से पावैं सनमान ॥

राग धनाश्री पद नं० ११

हों ब्रज माँगनों जू । ब्रजतजि अनत न जाऊंजू ॥
बूढ़े - बड़े भूपति भूतल में दाता सूर सुजानजू ।
कर न पसारों सिर न नवाऊं या ब्रज के अभिमानजू ॥
सुरपति नरपति नागलोक-पति राजा रंक समानजू ।
भाँति-भाँति मेरी आसा पुजवत ए ब्रजजन यजमानजू ॥
मैं ब्रत करि-करि देवमनाये अपनी घरनि संयूतजू ।
दियो है विधाता सब सुख-दाता गोकुलपति के पूतजू ॥
हों अपनों मनभायो लैहौं कत बौरावत बातजू ।
औरन कौं धन घनज्यौं वरषत मो चितवत हंसिजातजू ॥
अठसिधि नवनिधि मेरे मन्दिर तुव प्रताप ब्रजईसजू ।
कहि कल्यान मुकन्दतात कर-कमल धरो मम सीसजू ॥

दण्डक पद नं० १२

जय महाराज ब्रजराज कुल तिलक,
गोविन्द गोपीजनानन्द राधारमन ।
नंद नृप-गेहिनी गर्भ आकर रतन,

सिष्ट कष्टद धृष्ट दुष्ट दानव दमन ॥
बल दलन गर्व पर्वत विदारन,
व्रज भक्त रच्छा दच्छ गिरिराज धरधीर ।
बिविध खेला कुसल मुसलधर संग लै,
चारु चरणांक चित तरनि तनया तीर ॥
कोटिकंदर्पदर्पापहर लावन्यधन्य,
वृन्दारन्यवन्यभूषनमधुर ।
मुरलिका नाद पीयूषनिर्झर महानदन,
विदित सकल ब्रह्मरुद्रादि सुर ॥
कुरु गदाधर विषै वृष्टि करुना दृष्टि,
दीन को त्रिविध संताप ताप तपन ।
मैं सुनी तुव कृपा कृपन जन गामिनी,
बहुरि पैहै कहा मो बराबर कवन ॥

पद नं० १३

गोकुलानंद गोपीजनानंद श्रीनन्दानन्द नयनानन्द प्यारे ।
गिरिराजउद्धरन सुरराज-मदहरन वदनपर दुजराजकोटिवारे ॥
गोपनृपगेहिनी गर्भ आकर रतन राधिका कंठभूषण विलासी ।
असुरलोचन अगोचर महामहिम निजजनकरामल परब्रह्मरासी ॥
गजराज धीरगति मृगराज विक्रमी रसराज रसरसिक वनविहारी ।
भक्तजन भयहरनचरन अशरणशरण सकलसुखकरणदुखदोषहारी ॥
रूपवलकोटिकन्दर्पदर्पापहर हरध्यात पदकमल विश्वबंधो !
नामआभास अघराशि विध्वंसकर सकलकल्याणगुनग्रामसिन्धो ॥

नाम के पद राग भैरवी नं० १४

अघ संहारिनि अधम उधारिनि,
कलिकाल-तारिनी मधु-मथन-गुन कथा ।
मंगल विधायिनी प्रेम रस दायिनी,
भक्ति अनपायिनी होइ जिय सर्वथा ॥
मथि वेद गथि ग्रंथ कथि व्यासादि,
अजहुँ आधुनिक तन कहत हैं मति जथा ।
परमपद सोपान करि गदाधर पान,
आन आलाप तें जात जीवन वृथा ॥

हरिनाम महिमा के पद राग आसावरी नं० १५

है हरि तें हरिनाम बड़ेरो । ताकों मूढ़ करत कत झेरो ॥ध्रु०॥
प्रगट दरस मुचकुन्दहिं दीन्हों, ताहू आयुसु भो तम केरो ।
सुत हित नाम अजामिल लीनों, या भव में न कियो फिरि फेरो॥
पर अपवाद स्वाद जिय राख्यौ, वृथा करत बकबाद घनेरो ।
ताको दसयों अंस गदाधर, हरि हरि कहत जात कहा तेरो ॥

पद नं० १६

करि है कृष्ण नाम सहाइ ।
अधमता उर आनि अपनी मरत कत अकुलाइ ॥
अधम अगणित उद्धरे तव कहत यों संसार ।
कवन उद्यम आपनें करि सक्यों निजु निस्तार ॥
नैंकु ही धों करि भरोसो बसत जाके गांउ ।
क्यों सु ममता छाँड़िहै लै जियत जाको नांउ ॥

विरद विदत बुलाइ बहुतक हरि न धरि हैं लाजु।
तो गदाधर निगम आगम सब बकत बेकाजु ॥

राग सारंग पद नं० १७

हरि हरि हरि हरि रट रसना मम।
पीवति खाति रहति निधरक भई, होत कहा तोकों श्रम ॥
तैं तो सुनी कथा नहिं मोसे, उधरे अमित महाधम।
ग्यान ध्यान जप तप तीरथ व्रत, जोग जाग बिनु संजम ॥
हेम हरन द्विज द्रोह मान मद, अरु पर गुरु दारागम।
नाम प्रताप प्रबल पावक के, होत जात सलभा सम ॥
इहि कलिकाल कराल व्याल विष, ज्वाल विषम भोये हम।
बिनु इहि मंत्र गदाधर के क्यों, मिटिहै मोह महातम ॥

जमुना जी के पद राग सारंग नं० १८

जमुना देवी कौन भलाई।
नाम रूप गुन लै हरिजू को, न्यारी अपनी चाल चलाई ॥
उदबस देश कियो भ्राता को, तुमहिं परसि कोउ तहाँ न जाई।
जे तन तजत तीर तुम्हरे ते, तात किरन में गैल लगाई ॥
मुक्ति बधू को करि दूत पन अधमनि कों लै आनि मिलाई।
आपुन स्याम आन उज्वल करि तात तपत अपु सीतलताई ॥
जलको छल करि अनल अघन को, यह सुनकै कोउ क्यों पति आई।
निसदिन पच्छपात पतितन को, तदपि गदाधर प्रभु मन भाई ॥

राग भैरवी पद नं० १९

मेरे कलिकल्मष कुल नासे, देखि प्रवाह प्रभाकर कन्या।

वह देखो पाप जात जित तित बहे, ज्यों मृगराज देखि मृग सैन्या॥
दै पय पान पूत लौं पौषति जननि कृतारथ धनि बहु धन्या।
दीनो चहति गदाधरजू पै, चरन सरन अति प्रीति अनन्या॥

पद नं० २०

जगति यमुनाभिधा जयति जगदम्बा।
पुण्यपयसा न पावयति किल कंबा॥
सुभगनवसुजलजलदाभजलपूरा।
निखिलकलिकलुषौघनिर्द्दलनशूरा॥
धर्म्मधनकामादिकामितविधायिनी।
तीरभुवितनुमुचेपरमपददायिनी॥
कल्पतरुनिकरसंकुलितमनिकूला।
स्वच्छसैकततिरस्कृतमृदुलतूला॥
स्नानकृन्निजसहस्रभयतिरस्कारिणी।
पानकारिणि मनः शुद्धिविस्तारिणी॥
सुकृतकृतिसुकृतचयसंचयविवर्द्धिनी।
कृष्णचरणाम्बुजे रतिरससंवर्द्धिनी॥
कमलकुललोचना मधुपरुचिकज्जला।
हासनिभहंसगणसततसमुज्वला॥
तट निकटफुल्लवनचित्रपटधारिणी।
कोकरववागमलफेनवरहारिणी॥
विशदवृन्दावनपराग भूरंजिता।
बहुबिहगरम्यरणिताभरणसिंजिता॥

भंगभृकुटीभृंगसूचितानुग्रहा ।
परमवत्सलतया सर्वजनसुग्रहा ॥
सारसनिनादनिभसारसनिनादिनी ।
सुखद शीकरभरस्पृग्जनाह्लादिनी ॥
सप्ताब्धिभेदिनीसप्तसप्त्युद्भवा ।
हरिचरनरतगदाधरविरचितस्तवा ॥

बंशी के पद नं० २१

बंसी पटरानी भई ।
उपजी सरस सुवस जानि करि हरि गहि पानि लई ॥
सोवत श्याम लगाई हृदै सों छिन-छिन प्रीति नई ।
याही सों नित सती करत प्रिय दृष्टि न अनत गई ॥
पीवति अधर करति रति कूजित गति विपरीति ठई ।
बारबार मुंह लावत इहि सब मर्जादा बितई ॥
करे है अधीन त्रिलोक लोक याकी कीरति जगत छई ।
रसवस भए गदाधर प्रभु यह करी जगत विजई ॥

पद नं० २२

बिन सार जेतो भार है हो या मुरली में ।
एतो तो न देख्यौ वा महागिरबर में ॥
वाएँ ही उचाइ रहे सातद्योस कर में ।
जबहि संभारि हरिधरत हैं करनि कैसे२ हु आइलागति अधर में ।
एक सुहाग याहि दीनो है गदाधर प्रभु,
राख्यो अभिमान इहि थिर मैं न चर में ॥

राग मारू पद नं० २३

गोपाल लालकी बांसुरी माई विधिहू तें प्रवल प्रवीन।
(ऐरी) याने जगत कियो आधीन ॥ टेक ॥

चारि बदन उपदेश बिधाता, थापी थिर - चर नीति।
आठ बदन गरजति गरवीली, क्यों चलिये यह रीति ॥
विपुल विभूति लई चतुरानन, एक कमल करि थान।
हरि-कर कमल जुगल पर बैठी, बाढ्यो यह अभिमान ॥
एक बेर श्रीपति के सिखये, उन लिय सब गुन गान।
याके तो नँदलाल लाड़िलो, लग्यो रहत नित कान ॥
एक मराल पीठि आरोहन, विधि भयो प्रबल प्रसंस।
इन तौ सकल बिमान किये, गोपी जन मानस हंस ॥
श्रीवैकुंठनाथ उर बासिनि, चाहत जा पद रैंन।
ताको मुख सुखमय सिंहासन, करि बैठी यह ऐन ॥
अधर-सुधा पी कुल ब्रत टारचो, नहीं सिखा नहिं ताग।
तदपि गदाधर नन्द सुवन को, याही सौं अनुराग ॥

स्मरण तथा वन्दना के पद नं० २४

चिन्तय चित्त ! चिरं हरिचरणम् । गोपबधूजनहृदयाभरणम् ॥
स्वांकालंकृत बृन्दारण्यम् । निजदयिताकुचकुंकुमधन्यम् ॥
कालियविषधरफणिमणिदलनम् । स्तुतिसुपरिस्कृतपन्नगललनम् ॥
तरुणारुण कमलोदितकान्तम् । नखदीधितिहृतहृदयध्वान्तम् ॥
प्रणयिसु कामं ददतं सततम् । वनभुवि गोगणमनुगच्छन्तम् ॥
वृन्दारक वरवृन्दै र्वंद्यम् । वेदान्तार्थविदामभिनन्द्यम् ॥

कमलासनमनसापरिमेयम् । श्रुत्या गेयं गिरिशध्येयम् ॥
संपदि विपदि कदापि न हेयम् । स्तुत्तु स्तेमतती रिह देयम् ॥
स्मर नर शश्वत्पकंजनाभम् । विद्युद्वसनं नीलघनाभम् ॥
मौलिमिलन्मणिमञ्जुलवेशम् । स्निग्धश्यामलकुंचितकेशम् ॥
रत्नमयातुलकर्णाभरणम् । कमलदलायत चंचलनयनम् ॥
सुर भयहरणं व्रजजनशरणम् । धन्याव्याताम्बुजनिभचरणम् ॥
भालमिलद्वरकुकुंमतिलकम् । चन्दनचित्रितवक्षःफलकम् ॥
स्फुरदरुणाधरविनिहितवेणुम् । मुनिदुर्ल्लभचरणाम्बुजरेणुम् ॥
कण्ठतटे मणिराजमरीचिम् । बिभ्राणं शुभशोभावीचिम् ॥
तारावलिनिभमौक्तिकहारम् । संभृतसौन्दर्य्यामृतसारम् ॥
विततोरसिविलसद्वनमालम् । कटितटघटितसुकिंकिणि जालम् ॥
वलयागंदसंगतभुजदण्डम् । दनुजकुलान्तविधावतिचण्डम् ॥
चरणरणितमणिमयमंजीरम् । सच्चित्सुखघनसुभगशरीरम् ॥
त्रैलोक्याद्भुतशोभारुचिरम् । गोपतनुं नर चिन्तय सुचिरम् ॥
दुर्गतबन्धुं करुणासिन्धुम् । विश्वहितं हृदि कुरु जनबन्धुम् ॥
वनभुविसततं खेलानिरतम् । गोगणसहितं सुरमुनिमहितम् ॥
क्रीडन्तं निजसखिभिः साकम् । गोपवधूजनपुण्यविपाकम् ॥
अशरण शरणं भवभयहरणम् । प्रणम गदाधरगिरिवर-धरणम् ॥

राग भैरवी पद नं० २५

सुमिरहु वरनागर वर सुन्दर (श्री) गोपाललाल ।
सब दुख मिटि जैहै वे चितत लोचन विशाल ॥ध्रु०॥
अलकनि की झलकनि लखि पलकनि गति भूलि जाति,

भ्रुव विलास मन्द हास रदनछ्दम अतिरसाल ।
निन्दितरवि कुंडल छवि गंड मुकर झलमलात,
पिच्छगुच्छ कृतवतंस इन्दुविमल विन्दुभाल ॥
अंग - अंग जित - अनंग माधुरी तरंग रंग,
विमद गयंद होत देखत लटकीली चाल ।
रतन रसन पीत वसन चारुहार वरसिंगार,
तुलसी रचित कुसुमखचित पीन उर नवीन माल ॥
व्रजनरेश - वंशदीप वृन्दावनवर-महीप,
श्रीवृषभान मान पात्र सहज दीन-जन-दयाल ।
रसिक रूप भूपरासि गुन निधान जान राय,
गदाधर प्रभु युवतीजन मन मानसर मराल ॥

राग जैति श्री पद नं० २६

मोहि तुम्हारी आस । जिनि करहु न निरास ।
मन मेरो बंध्यो मोहपास । स्वारथ पर सौंधो कैसो दास ।
मोहि अपनी करनी के त्रास । निसि बीतति भरि-भरि लेत स्वांस
रचि-रचि कहिये बातें पचास । मनकी मलिनताको कहुँ न नास ।
जौ चितवैं नेकु श्रीनिवास । गदाधर मिटहि दोषदुख अनायास

राग देवगन्धार पद नं० २७

अहो गोपाल कृपालय प्यारे ।
सुमिरत हियो भरयौई आवत गुनगन मधुर तिहारे ॥
कहाँ वह बकी कहाँ जननी गति कहाँ अहि कहाँ पद अंक ।
करत प्रनाम छिमे सुरपति के वे अपराध निसंक ॥

पावक पान दुसह नहिं लागत ज्यौं निजु जनकी पीर ।
वच्छबाल जब व्याल गिले तब ह्वै ही गये अधीर ॥
ऐसे तुमसों कपड दिवानिसि यह मेरो अति दोष ।
एते पर हौं मनमत जानत करत जितौ परिपोषु ॥
तजि तुमसे अति हितू गदाधर डहकायो बहु ठौर ।
अब जिनि होइ कबहु या कृपनहि तुम छांड़े गति और ॥

राग श्री पद नं० २८

नमो नमो जय श्रीगोविंद ।
आनँद मय ब्रज सरस सरोवर, प्रगटित विमल नील अरविंद ॥
जसुमति नीर नेह नित पोषित, नव-नव ललित लाड़ सुखकन्द ।
ब्रजपति तरनि प्रताप प्रफुल्लित, प्रसरित सुजस सुवास अमन्द ॥
सहचर जाल मराल सङ्ग रँग, रसभरि नित खेलत सानन्द ।
अलि गोपीजन नैन गदाधर, सादर पिवत रूप मकरन्द ॥

दण्डक पद नं० २६

जयति श्री राधिके सकल सुख साधिके,
तरुनि - मनि नित्य नवतन किसोरी ।
कृष्ण तनु नील - घन रूप की चातकी,
कृष्ण - मुख - हिम - किरन की चकोरी ॥
कृष्ण - दृग - भृङ्ग - विश्राम-हित - पद्मिनी,
कृष्ण दृग मृगज बन्धन सुडोरी ।
कृष्ण - अनुराग - मकरंद की मधुकरी,
कृष्ण - गुन - गान रस - सिंधु बोरी ॥

एक अद्भुत अलौकिक रीत मैं लखी,
मनसि स्यामल रंग अंग गोरी।
और आश्चर्य कहूँ मैं न देख्यो सुन्यो,
चतुर चौसठिकला तदपि भोरी॥
विमुख परचित्त ते चित्त जाको सदा,
करत निज नाह की चित्त चोरी।
प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे बनै,
अमित महिमा इतै बुद्धि थोरी॥

राग गौरी पद नं० ३०

नन्द-कुल-चंद वृषभानु-कुल-कौमुदी,
उदित वृन्दाविपिन विमल आकासे।
निकट वेष्टित सखी वृन्द वर-तारिका,
लोचन चकोर तिन रूप-रस-प्यासे॥
रसिक जन अनुराग उदधि तजि मरजाद,
भाव अगनित कुमुदिनी गन विकासे।
कहि गदाधर सकल विस्व असुरनि बिना,
भानु भवनाप अग्यानन विनासे॥

राग सोरठ पद नं० ३१

मोहन बदन की सोभा।
जाहि देखत उठति सखि आनंद की गोभा॥
नैन धीर अधीर कछु-कछु असित सित राते।
प्रिया आनन चंद्रिका मधु-पान रस माते॥

बंसिका कलहंसिका मुख-कमल-रस राची ।
पवन परसत अलक अलिकुल कलह सी माची ॥
ललित-लोल-कपोल कुंडल मधुर मकराकार ।
जुगल शिशु सौदामिनी जनु नचत नट चटसार ॥
विमल जस जु सुढार मुक्ता नासिका दीनों ।
ऊँच आसन पर असुर-गुरु उदौ सौ कीनों ॥
भौंह सौहनिका कहौं अरु भाल कुमकुम बिंदु ।
स्याम बादर रेख परि मनु अबहिं ऊग्यौ इन्दु ॥
लग्यौ मन ललचाइ तातें टरत नहिं टारचो ।
अमित अद्भुत माधुरी पर गदाधर वारचौ ॥

राग भूपाली पद नं० ३२

मद गजराज कीसी चाल ।
बार भुज दण्ड सुंड की सोभा हरि लीनी नन्दलाल ॥टेक॥
चूरन कच कुंचित अनंग अकुंस ले लटकत भाल ।
चौंर चारु अवतंस मंजरी मद कन श्रम जल जाल ॥
गन्ध अंध आवत अलिघेरे गुंजत मंजु मराल ।
मोरपंख फरहरत बात वस जनु ढलकति है ढाल ॥
घनन घनन घंटिका रटित कटि सुन्दर सुखद सुताल ।
खनन खनन नूपुर शृङ्खल से बाजत लजत मराल ॥
युवती हृदै सरस सरसी मैं खेले हैं चिरकाल ।
न्याइनि अंग अंग अरुझाने उनके मन सैवाल ॥
धातु विचित्र चित्र तन शोभा कल कल दामन माल ।

हठिकुल धर्म ढीह ढाहत है रदन कटाक्ष विशाल ॥
मुरली रव गुंजार सुनत ही कांपति चित वृजबाल ।
रिस रुसनें गदाधर ह्वै गये बन वेली बेहाल ॥

राग गौरी पद नं० ३३

देखिरी आवत गोकुल चंद ।
नखसिख प्रति बन वैस विराजत हरत दुखद्वंद ॥
आपुन ही जु बनाइ बनाए गायन के पद छंद ।
तेई मुरली माँझ बजावत मधुर मधुर सुरमंद ॥
अगनित वृज युवतिन मन बांधत दुहूं भौंह दृढ़ फन्द ।
पोषत नैंन मधुपकुल एकहि बदन कमल मकरन्द ॥
सहज सुवास पास नहिं छाँड़त गोप गाइ अलि वृन्द ।
अङ्ग अङ्ग बलि जाइ गदाधर मूरति मै आनन्द ॥

अनुराग के पद नं० ३४

सखी, हौं स्याम रंग रंगी ।
देखि बिकाइ गयी वह मूरति, सूरति माहिं पगी ॥
संग हुतो अपनो सपनो सो, सोइ रही रस खोई ।
जागेहु आगे दृष्टि परै सखि, नेकु न न्यारो होई ॥
एक जु मेरी अँखियनि में निसिद्योस रह्यो करि भौन ।
गाइ चरावन जात सुन्यो सखि सो धौं कन्हैया कौन ॥
कासो कहौं कौन पतियावै, कौन करै बकवाद ।
कैसे कै कहि जात गदाधर, गूँगे को गुड़ स्वाद ॥

राग विहाग पद ३५

जो मन स्याम-सरोवर न्हाहि ।

बहुत दिनन को जर्‌यो बर्‌यो तूँ, तबही भले सिराहि ॥
नयन बयन कर चरन कमल से, कुंडल मकर समान ।
अलकावली सिवाल जाल तहँ, भौंह मीन मो जान ॥
कमठ पीठ दोउ भाग उरस्थल, सोभित दीप नितंब ।
मनि मुकुता आभरन विराजत, ग्रह नछत्र प्रतिबिंब ॥
नाभि भँवर त्रिवली तरङ्ग, झलकत सुंदरता वारि ।
पीत वसन फहरानि उठी जनु, पदुम रेनु छबि धारि ॥
सारस सरिस सरस रसना रव, हंसक धुनि कलहंस ।
कुमुद दाम बग पङ्गति बैठी, कविकुल करत प्रसंस ॥
क्रीड़ा करति जहाँ गोपी जन बैठि मनोरथ नाव ।
बार बार यह कहत गदाधर, देह सँवारौ दाँव ॥

अथ रूप माधुरी पद नं० ३६

गिरिधरलाल जू अतिराजैं ।

देखत अङ्ग अङ्ग की शोभा कोटिमकरधुज लाजे ॥
उन्नत वाम भाग बाहु कर पल्लव मनि मुद्रिका बिराजै ।
जनु सुरराज गर्व भेदन कों चमकै गाजै ॥
जननी जनक को हियो हुलसावत बल आडम्बर साजै ।
गोपी वदन कमल बनमें दृग भ्रमर भ्रमत भ्राजै ॥
हसि हसि कहत सखन सौं बातें तब जु दसन छबि छाजै ।
प्रगट उदोत गदाधर मन में दीख तिमर भय भाजै ॥

राग सोरठ पद नं० ३७

राधे, रूप अद्भुत रीति।
सहज जे प्रतिकूल तो तन, रहे छाँड़ि अनीति॥
कचनि रचना राहु ढिंगही, मुदित वदन मयंक।
तिलक बान कमान दृग मृग, रहैं निपट निसंक॥
रतन जतननि जटित जुग ताटंक रबि रहे छाज।
तदपि दूनी जोति मोतिन, मगडली उडुराज॥
अधर सुधर सुपक्क बिम्ब, सुभग दसन अनार।
धीर धरिकै कीर नासा, करत नहिं संचार॥
नील पट तम जोन्ह तन छबि, संग रङ्ग रसाल।
कोक जुगल उरोज परसत नाहिं भुजा मृनाल॥
निकट कटि–केहरी पै गज–गति न मैटी जाति।
प्रगट गजगति जहाँ जंघा, कदलि रुचि हुलसाति॥
गदाधर बलि जाइ बूझत, लगत है मन त्रास।
इति संपति सहित क्यों पिय, देत नाहि मवास॥

राग सोरठ पद नं० ३८

राधे जू के बदन की शोभा।
जाहि देख मयंक थाक्यो कृष्ण मन लोभा॥
सीस फूल सिर ऊपर सोहे भाल कुमकुम बिंदु।
मानो गिरि सुमेरु ऊपर वस्यो रवि अरु इंदु॥
दिये आड कुरंगमद की मलय केसर सींच।
मानो सुरगुरु उदय कीनो हेमगिरि के बीच॥

तनक तरोना श्रवन सोहे कनक रत्न जराय।
मानौं रवि की किरण पसरी रही भूपर छाय॥
चंचल नयन कुरंग मानों सजल जलद जल ऐन।
चिते बांकी चितवनी में उभय मारे मेंन॥
सुभग नासा वेसर सोहे स्वाँति सुत राजें।
निरख मुक्तन येही शोभा असुर गुरु लाजें॥
अधर दशन तंबोल राजत सहज विहसत बाम।
मानों दामिनी दशो दिश की वसत एक ही धाम॥
निरख प्रिया तनकी यह शोभा चिबुक सांवल बिंद।
मानो छबि की जाल में परचौ अलिसुत फंद॥
अंग अंगसों प्रेम बरखत सकल सुखकी मूरि।
राधेजू के चरण की रज गदाधर सिर भूरि॥

राग सारंग पद नं० ३६

लाडिली गिरधरन प्रिया पिय नेंननि आनन्द देतिरी।
अति अनुपम गुन रुप माधुरी बरबस सरबसु लेतिरी॥ध्रु॥
वदन सदन सोभा को सोहै उपमा को कोऊ नाहिरी।
चन्द अमन्द लाज अरचिता पर कलंक मिसि छांहरी॥
कच रचना में मांग मोतिन की उपमा कहो विचारिरी।
अपनेहि बल मनहु निसाकर करत राहु विदारिरी॥
कनक दण्ड केसरि को टीको लटकति लट भलि भांतिरी।
मानहु सुभग सुहाग भाग की विजै धुजा फहरातिरी॥
भौंह मोहनी यन्त्र लिखि लिपि कबि काहूं न बखानरी।

जाके निरखत मन मोहन कर मुरली गिरत न जानरी ॥
अंजनरञ्जित नैंन सलोने सोभा हरिमन खागीरी ।
स्याम रूपके पिवत पिवत नित सरस श्यामता लागीरी ॥
नासारुचिर खारी सोहै उपमा अन अवरेखिरी ।
लरत चकोर चपल लोचन ढिंग पावक कनका देखिरी ॥
हसन लसन अधरन अरुनाई अति छबि बढ़ी अपार री ॥
मनहुं रसाल मृदल पल्लव पर बगरायो घनसाररी ॥
रचि अवतंस रसाल मञ्जरी फबी कपोल सुजातरी ।
मानहुं मैन मूर बैठ्यौ करि हरि मन मृग की घातरी ॥
खुटिला खुभी जराइ जगमगत मोपै जात न भाखिरी ।
मनहुं मार हथियार आपनें एक ठौर धरि राखिरी ॥
कंठ कपोत पोत पुंजनि मे मनि–मनिश्रां रंग रातेरी ।
मानहुं उतरि धरनि सुत यमुना नीर अन्हातेरी ॥
कंठ सिरी दुलरी वरग्रीवां अति सुख सोभा साररी ।
नलिनी दलके जल ज्यौं झलकत गज–मोतिन के हाररी ॥
चौंकि चमक कंचुकी सारी कारी रातें रंगरी ।
अरुन किरनि रही छाइ उदधिते निकसत प्रात पतंगरी ॥
अंगद वलय मुद्रिका नख छबि सोभित भुजा सुढाररी ।
जनु आचूल मूल ते फूली कनक लता की डाररी ॥
पीन उरोज कुंभ रोमावलि राजति ता अति सुंडरी ।
मानहु मदन मतंग धस्यौ है नाभि अमृत के कुंडरी ॥
उपमा एक और मन आवत बुधिबल करत विचाररी ।

मानहु सैल सिंधुतें निकसी नील यमुन जल धाररी ॥
गुरु नितंव किंकिनी कनक की कूजित रुनझुन रावरी ।
मानहु मिले करत कोलाहल कलविंकनि के सावरी ॥
सुनियति मनि मंजीर धीर धुनि उपमा न आवै हाथरी ।
मन मोहन मोहन कों जनुं गुनियत मोहन गाथरी ॥
अरुण चरण पंकज नख दीपति जावक चित्र विचित्ररी ।
फूली सांझ मांझ मानौ जे झलकत विमल नक्षत्ररी ॥
अद्भुत अखिल लोककी सोभा रोम रोम रहि पूरिरी ।
गति विलास हिय हारि मानि गज डारत सिर पर धूरिरी ॥
करि साहस यह कहत गदाधर सहि कविकुल उपहासरी ।
अपने प्रान नाथ मिलि स्वामिनि मो मन करहु निवासरी ॥

राग गौरी पद नं० ४०

आजु व्रजराज को कुँवर बनते वन्यो,
देखि आवत मधुर अधर रंजित बेनु ।
मधुर कल गान निज नाम सुनि स्रवन पुट,
परम प्रमुदित बदन फेरि हूँकति धेनु ॥
मद विघूर्णित नैन मंद बिहँसनि बैन,
कुटिल अलकावली ललित गोपद रेनु ।
ग्वाल बालनि जाल करत कोलाहलनि,
शृंग दल ताल धुनि रचत संचत चैनु ॥
मुकुट की लटक अरु चटक पटपीत की,
प्रगट अंकुरित गोपी मनहिं मैनु ॥

कहि गदाधर जु इहि न्याय ब्रज-सुन्दरी,
बिमल बनमाल के बीच चाहतु ऐनु ॥

मान के पद नं० ४१

आज माई रिझाई सारंग नैंनी ।
अतिरस मीठी ताननि कानानि काननि में अमृत सो बरसत,
अँखियाँ जल झलमलाइ आई भई तन पुलकनि श्रेणी ॥
आपु तकति करताल देत दीनो न जाइ मुरझाइभाइ भीनी गजगैनी ।
प्रेमपागि उरलागि रही गदाधर प्रभुके पिय अंग अंग सुखदैनी ॥

पद नं० ४२

मानिनी कीजिये मानु नहिं स्यामसों ।
सफल किन करहि निज दिव्यदामिनिप्रभा नीलनवजलद अभिरामसों॥
देखि उर आपनें ज्यों बिम्ब जीत इंदुनीलमनि कलधौत दामसों ।
सुख सखीजन जुगल जगमगत जोइ जी होइ अति आरति कामसों ॥
लाल गोपाल मन ध्यान तेरो धरें रसन रट प्रगट नत नामसों ।
अनुख यह मोहि दत्तन विचल नाहु नेह नागरि प्रकृति वामसों ॥
कहत बड़ी वेर भई अर्धजामिनि गई आइ रह्यो भोर युग यामसों ।
अब धरनि धर पाइ बोले गदाधर जाइ मानि रुचि कुंज नव धामसों ॥

पद नं० ४३

भज भामिनी कमल लोचन कुँवर आजु ।
कमल कोमल दलनि सहज सज्जा रची सजि तकत नव पंथ युवराजु ॥
मान वलिहार करिडारि नंदलाल पर आनमन मिलन को साजु ।
लाल तमाल रति राज गज बस परे अब नहीं विलंबसों काजु ॥

सुनत सखि वचन मन प्रेम विह्वल भई उठि चली तन सुरति बाजु।
मिलत नव कुंज मंदिर गदाधर भयो हंस हंसी सुख समाजु ॥

राग कल्याण पद नं० ४४

यातें हो कहत करन केलि।
सुनिरी सखी तेरे मन मंडप बोंडी यौवन बेलि ॥
प्रीति कुसुम आनन्द मकरन्द हरही आलि अलि झेलि।
गदाधर प्रभु अंग संग सुफल फलिहु सखिसुमुखि सहेलि ॥

दान के पद राग सूहो नं० ४५

जो न चले कुल कर्म कहा यह रीति गनि।
कनक कूट द्वै दै अपने बबा ज्यों और गाइनिके टोल बोलि द्विज
अैसे कहावहु दानी ॥ १ ॥
यहाँ धन गहनौ पहिरैंगी सुत की संपति ब्रजपतिजू की रानी।
भलैं हो भलैं गदाधरके प्रभु-प्रभु जीय की बात मैं जानी ॥२॥

कालिय मर्दन का पद नं० ४६

नचत गोपाल फणिफणा रंगे।
मनहु मनि नील के खंभ ऊपर सिखी नृत्य आरम्भ किय अति-
उतंगे ॥ ध्रु० ॥ प्रथम तरुतुंग चढ़ि झंप यमुना लई सुभग
पट पीत कटि तट लपेटे। एक घनतें निकासि और घनकौं
चल्यौ श्याम घन मनहु चपलाहि भेटे ॥ १ ॥ बहुरि फिरि
झगरि चढ़ि सीस तांडव रच्यौ परसि पदतलनि मनि रंगु सुहायो।
चरण पट तार विष झार झरहत जतु ते लतपतेक हू नीरनायो ॥२॥
दुसह हरि भारतें कंठ आये लटकि परसि करै कवि सकल उपमा

विचारा । मनहु नखचन्द्र की चन्द्रिका त्रासते उरपि नीचीधसी तिमिर धारा ॥ ३ ॥ गगन गुणगननि गुण गान गंधर्व करै जै करैं देव मुनि पहुप वरषै । तरनिजा तीर भरभीर आभीर कुल धीरमन मांझ धरि अधिक हरषै ॥ ४ ॥ विवश भूषण वसन सिथिल रसना कसन शरण आई जबहि नागनारी । कान्ह करुणा करी चिन्ह पद सिर धरे मेटि खगराज की त्रास भारी ॥ ५ ॥ पूजि हरि कों चल्यौ नाग रमणकदीप श्यामजू मुदित जल तीर आये । कहि गदाधर जु आनन्द कुलाहल भयौ सकल व्रजजन निकिरि प्राण पाये ॥ ६ ॥

अथ रास के पद राग सारङ्ग नं० ४७

संगीत रस कुशल नृत्य आवेस वश,
लसति राधा रास मंडल विहारणी ।
दिव्य गति चरण चारण चक्रवर्त्तिनी,
कु वर श्यामल मनोहरण मनहारिणी ॥
लोचन विलास मृदुहास मन उल्लास,
नन्द नन्दन मनसि मोद विस्तारिणी ।
मृदुल पद विन्यास चलति वलयावली,
किंकिणी मंजु मंजीर झन कारिणी ॥
रूप अनुपम कांति भांति जाति न वरनी,
पहिरि आभरण षोडष सुश्रृंगारिणी ।
मृदंग बीना तार-स्वर पंच संचार,
चारुता चातुरी सार अनुसारिणी ॥

उघटमुख सबद पीयूष वर्षित मनौ,
सींचि पीय श्रवणतन पुलक कुलकारिणी ।
कहि गदाधरजु गिरिराजधर तैं अधिक,
विदित रस ग्रंथ अद्भुत कला धारिणी ॥

पद नं० ४८

करत हरि नृत्य नवरंग राधासंग लेत नव गति भेद चच्चरी तालके । परस्पर दर्श रसमत्त भये तत्त थेई वचन रचना सु संगीत सुरसालके ॥ फरहरत बर्हिवर ढरहरत उरहार भरहरत भ्रमर वर बिमल वन मालके । खिसत सित कुसुम शिर हसत कुंतल मनौ हुलस कल झलमलनि स्वेदकण भालके ॥ अंग अंगनि लटक मटक भंगुर भ्रुकुटि पट कपट ताल कोमल चरण चालके । चमक चल कुंडलनि दमक दशनावली विविध व्यंजित भाव लोचन विशाल के ॥ बजत अनुसार दुमि द्दमि मृदंगनि नाद झमकि झंकार किंकिणी जाल के । तरल ताटंक तडकित तड़ित नील नव जलद पै यों विराजति प्रिया पास गोपाल के ॥ व्रजयुवती जूथ अगणित वदन चन्द्रमा चंद भये मन्द उद्योत तिहिं काल के । मुदित अनुराग वस राग रागिनि तान गान गत गर्ब्ब रंभादि सुरवाल के ॥ गगन चर सघन रस मगन वर्षत फूल वारि डारत रत्न यत्न भरिथाल के । एक रसना गदाधर न वरनत बनै चरित अद्भुत कुँवर गिरिधरन लाल के ॥

राग केदार पद नं० ४९

आजु मोहन रची रास रस मंडली ।

उदित पूरण निशानाथ निर्मल दिशा निरखि दिनकरसुता सुभग पुलिनस्थली ॥ध्रु॥ बीच हरि बीच हरिणाक्षि माला बनी, तरुण तापिच्छ तरु (जनु) कनक कदली रली। पवन वश चपल दल डुलनिसी देखियति चारु हस्तक भेद भांति भारी भली ॥ १ ॥ चरण विन्यास कर्पूर कुकुंम रेणु पूरि रही दिश-विदिश कुंज-वन की गली । कुन्द-मन्दार अरविन्द—मकरंद-मद कुंज पुंजनि मिले मंजु गुंजत अली ॥२॥ गान रस तान के बांण वेध्यो विश्व विषपान जानि (अभिमान) मुनि ध्यान रति दलमली। अधर गिरिधरण कें लागि अनुराग की जगत बिजई भइ मुरलिका काकली ॥३॥ रसभरे मध्य-राजत खरे देखि दोऊ नंदनन्दन कुँवर वृषभानकी लली। देखि अनिमेष गदाधरजू लोचन युगल लेखि जिय आपनी भाग-महिमा फली ॥४॥

राग बिलावल पद नं० ५०

निर्तत राधानन्दकिशोर।

ताल मृदंग सहचरी बजावत बिच-बिच मोहन मुरली कलघोर ॥
उरप तिरप पग धरत धरणिपर मंडल फिरत भुजन भुजजोर।
शोभा अमित विलोक गदाधर रीझ-रीझ डारत तृण तोर ॥

विवाह के पद (राग जैतश्री) पद नं० ५१

दूलह सुंदर श्याम मनोहर दुलहिनि नवल किशोरी जू।
मंगल रूप लोकलोचनकौं रची विधाता जोरी जू ॥
रास विलास व्याह विधि नित प्रति थिर चर मन आनन्दाजू।

शारद निशा दिशा सब निर्मल डहडहे पूरण चन्दाजू ॥
यमुना पुलिन नलिन रसरंजित सुभग संवारी चौरीजू ।
बोलत मधुर वेदवाणी मिले सी भौंर अरु भौंरी जू ॥
गोपी जुरि जनु कंज कलिनिको आमर मौर बनायौ जू ।
झलकत विमल नक्षत्र मुक्तासे गगन बितान तनायौजू ॥
मधुर कंठ कोकिला सवासिनि गीत सरस स्वर गावैंजू ।
बाजे द्वार पर सकल देव मुनि बहु बाजंत्र बजावैंजू ॥
आस-पास लहलही वनवेली जुरि जानौ कौतुक-हारीजू ।
कुसुम नैन अलि अंजन दीनो नव पल्लव तन सारीजू ॥
सारस-हंस-कपोत-कीर द्विज शाखागोत्र उचारैंजू ।
नचत मयूर नौछावरि करिकरि द्रुम निज फूलनि डारैंजू ॥
फूले द्रुम कुसुमन की शोभा असित पीत सितराते जू ।
चोवा चंदन बंदन केसरि छिरके मनौ बरातेजू ॥
इहिं विधि सदा विलास रासरस अगणित कल्प बितायेजू ।
ते सुख शुक शिव शारद नारद शेष सहस्र मुख गायेजू ॥
और कहां कहि सकै गदाधर मोहन मधुर विलासाजू ।
रसना सहज शुद्ध करिबेकौं गावत हरिके दासा जू ॥

राग काफी पद नं० ५२

सुन्दर सेहरो वन्यों । लालजूको सेहरो बन्यों ॥टेक॥
सेहरो हरि दुलह के कुसुम भांति--भांति ।
जाहि देख लघु लागत बने मोतिनकी कांति ॥
श्रवणन हरि दूलहके बने हें करणफूल ।

छबि रविकी जगमगति जोति न समतूल ॥
कुंकुम को तिलक बन्यों है ललाट।
मानो यहां विधि सवारी मनसिजकी बाट ॥
मुक्ताफल नासाकौ सबकौ चित चोरें।
हँसन दसन रसन ज्योति अधररंग तंबोरें ॥
दुलरी गज मोतिनकी मध्य माणिक दमके।
मानो नक्षत्र पंक्तिमें मंगलकी चमके ॥
भुज भुजंग अंग की छबि कहा कहूं।
मानो पहुंची रुचिर रचि रीझ रीझ रहूं ॥
बरण बरण फूलन की माला मन मोहे।
रतिपति के झुलनासों झुलना उर सोहे ॥
कटितट पर किंकिणी रुणझुण राव।
कूजत कलहंसन कों नूपुर सुभाव ॥
श्री वृन्दावन भूमि मंडप वर कुंज।
बदत बेदबाणी सी मधुपन के पुंज ॥
दूलह ब्रजराज कुंवर दुलहनि ब्रजनारी।
शरद-निशा रास-विलास सबहीं सुखकारी ॥
कोकिल कल गावत हैं मंगल कल गीत।
बाजे द्वार देव मुनि पूजी सब रीत ॥
फूली द्रुमलता बेली श्वेत-पीत-राती।
चंदन वंदन केसर सो चरचे बराती ॥
यह सुख जो हृदय रहे तो मिटे मन दाहु।

कहत हैं गदाधर चित इत उत नहिं जाहु ॥

राग विहागरो पद नं० ५३

प्रथम ग्रंथ व्याह विधि ह्वै रही अब कंकन चारु विचार ।
हँसि-हँसि कसिकसि ग्रन्थिबनावैं नवल निपुन ब्रजनारि ॥
ना छूटै मोहन डोरना हो वलिबांध्यो लडैती के पांनि ॥ध्रु॥
बड़े होहु तौ छोरि औहौ सुनहु घोषके राइ ।
करजोरो बिनती करौ कै छुवहि प्रियाजू के पाइ ॥
यह न होइ गिरि को धरिबौ हो सुनहु कुंवर गोपीनाथ ।
बहुत कहावत हे आपुन, अब काहे कांपन लागे हाथ ॥
स्वेद सिथिल कर पल्लव हरिलीनो छोरि सम्हारि ।
किलकि कहै सखि स्याम की अब तुम छोरहु सुकुवारि ॥
नाछूटै लडैतीं डोरना हो तुम कत करतिरसहाउ छाडहु निपट सयानु
छोरन देहु कुंवरि को कंकन कै बोलहु वृषभानु ॥
कमल–कमल करि वरनही हो धानि पिया के लाल ।
अब कविकुल सोचे भए जाए हैं कटीले नाल ॥
ज्यौं ज्यौं छूटे डोरना हो त्यौं त्यौं बंधे प्रेमकी डोरि ।
देखि दुहुन की रीति सखि सब हँसहि मुदित मुख मोरि ॥
लीला ललित मुकुन्दचन्दकी कर रसिक रस पान ।
अविचल होहु सदा युगयुग यह जोरी बलि कल्यान ॥

राग बिहाग पद नं० ५४

युगल वर आवत हैं गठजोरें ।
संग शोभित वृषभाननन्दिनी ललितादिक तृणतोरें ॥

सीस सेहरो बन्यौं लालकें निरख हँसत मुख मोरें।
निरख-निरख बलि जाय गदाधर छबि न बढ़ी कछु थोरें॥

राग बिलावल पद नं० ५५

दिन दूलह मेरो कुँवर कन्हैया।
नित प्रति सखा सिंगार सम्हारत नित आरती उतारत मैया॥
नित प्रति गीत वादित्र मंगल धुनि नित सुर मुनिवर बिरद कहैया।
सिरपर श्री व्रजराज विराजत तैसेई ढिंग बलनिधि बल भैया॥
नित प्रति रास विलास व्याह विधि नित सुर तिय सुमननि बरषैया।
नित नव-नव आनन्द वारनिधि नितही गदाधर लेत बलैया॥

राग सारंग (ज्योनार के पद) नं० ५६

श्री वृषभान सदन भोजनको नन्दादिक सब आयेजू।
तिनके चरण–धरण कौं कोमल पट पाँवडे बिछायेजू॥
रामकृष्ण दोउ वीर विराजत गौरश्याम युग चंदाजू।
जिनकौ रूप अनूप माधुरी मुनिजन मनको फंदाजू॥
चंदन घसि मृगमद केसरिसौं भोजन भूमि लिपाईजू।
अतिउज्वल कपूर चूर करि रचना चौक पुराईजू॥
मंडप छयौ कमल कोमल दल सीतल छांह सुहाईजू।
आसपास परदा फूलनि के माला जाल गुहाईजू॥
सीतल स्वच्छ कुंकुमके जलसों सबके चरण पखारेजू।
करि आदर करजोरि सबनिसौं कनक पीठ बैठारेजू॥
राजत गोपराज भूपति संग विमल वेष आभीराजू।
मनो समाज राज–हंसनिकौ मानसरोवर–तीराजू॥

धरे आनिकैं फटिक कटोरा अरु कंचन की थारीजू।
ढिंग ढिंग धरी सबनिकै सुन्दर भरि सीतल जल-झारीजू॥
परसन लगे पुरोहित हितसों जिनकी बिदित बडाईजू।
जिनकैं दरस-परस संभाषण जनौ सुरसरिता आईजू॥
गावन लगी गीत गारीनिके सुकुमारी बृजनारीजू।
अतिअनुपम अनुराग परस्पर सुख शोभा वह न्यारीजू॥
ओदनकी उज्वलता मानहु स्वयश रुप धरि आयौ जू।
पीत पकौरी हित जनु इनको प्रकट ही आय जनायौजू॥
बरी-वरा अरु खरल बिजौरा पापर पीत बनायेजू।
वर्ण कनकके बेसनकेजु प्रकार न जात गनायेजू॥
आम्ल बेल आंब इंदुक निंबू फल भले संधानेजू।
सद सीरा सुरभी रस और घृत सौरभ घ्राण अघानेजू॥
सौंधावासित खोहा सिखरनि अंबरस रसना तोषेजू।
आमलरस तीक्ष्णरस कटुरस लौनमिले रस पोषेजू॥
फेनी सुभग जलेबी मोदक घेवर बहु बिस्ताराजू।
मानहु भये प्रकट भूतलपर अमृत के (ये) अवताराजू॥
शीतल सुभग सुजात सुकोमल विविध भांति पकवानाजू।
तेउ प्रकार परे नही कबंहु सुरपतिहूके कानाजू॥
और बहुत विधि षटरस व्यञ्जन परसनवारे हारेजू।
यद्यपि ये सरसुति की सी मति तदपि न जात संभारेजू॥
करि आचमन उठे सब बृजजन मनमें अति सचुपायेजू।
भूषण पट सौंधे बीरिनिसौं पूजित सदन पधारेजू॥

वह सोभा वह संपति वह सुख कापै जात वखान्यौजू ।
जूठनि जाय उठाय गदाधर भाग्य आपनौ मान्यौजू ॥

(शीतवर्णन) पद नं० ५७

यह रीत नीकी लागत सीतकी ।
अंशन भुजधर पोढ़े पियप्यारी बात करत रसरीतकी ॥
बन गई एक रजाई भीतर राधामोहन मीतकी ।
गदाधर प्रभु हँसत सरसरितु चाह परस्पर जीतकी ॥

अथ बसंत ऋतु वर्णन पद नं० ५८

देखोऊ प्यारी कुंजबिहारी मूरतिवंत बसंत ।
मोरी तरुण तरुलता तनमैं मनसिज रस वरसंत ॥
अरुण अधर नव पल्लव शोभा विहसनि कुसुम विकास ।
फूले विमल कमल से लोचन सूचित मनको हुलास ॥
चल चूर्ण कुन्तल अलिमाला मुरली कोकिल नाद ।
देखियति गोपीजन बनराई मुदित मदन उनमाद ॥
सहज सुवास स्वास मलयानिल लागत सदानि सुहायौ ।
श्रीराधामाधवी गदाधर प्रभु परसत सुखपायौ ॥

पद नं० ५९

अद्भुत शोभा वृन्दावनकी देखो नन्दकुमार ।
कंत बसंत जान आवत वन वेलिन कियो शृंगार ॥
पल्लव वरण वरण तन पहरे वरण वरण फल फूल ।
ये तौ अधिक सुहाये लागत मनो अभरण समतूल ॥
बालक बिहग अनंग रंग भरि बाजत मनो बधाई ।

मंगल गीत गायबेको जानो कोकिल बधू बुलाई ॥
बहत मलय मारुत परिचारक सबको मन संतोषे ।
द्विज भोजन सो होत अलिन के मधु मकरन्द परोसे ॥
सुनि सखि वचन गदाधर प्रभुके चलो प्रीतम पै जैये ।
नव निकुंज महल मंडप में हिलमिल पंचम गैये ॥

पद नं० ६०

तेरी नवल तरुणाता नव बंसत । नव नव विलास उपजत अनन्त ॥
नव अरुणाधर पल्लव रसाल। फूले बिमल कमल लोचन विशाल ॥
चल भृकुटी भंग भृंगनिकी पांति । मृदुहसनि लसनि कुसुमनिकी कांति
भई प्रकट अल्प रोमावलि मौर । स्वास सुरभि मलय पवन झकोर ॥
फले फल उरोज सुन्दर सुठान । मधु मधुर बोलनि कोकिला गान ॥
देखत मोहे बृज कुंवरराय । बाढ़यौ मन-मन्मथ चौंगुनौं चाय ॥
तोहि मिलि बिलस्यौ चाहत हैं स्याम । जाहि देखत लज्जितकोटिकाम ॥
तव चली चरण मंथर बिहार । रन झनन-झनन नूपुर झंकार ॥
पुलकित गोकुल कुलपति कुमार । मिलि भयौ गदाधर सुख अपार ॥

श्री श्री महाप्रभु गौरचन्द्रजी के होरी के पद नं० ६१

खेलत फाग रंग रह्यो सजनी नागर गौर गोपाल ।
जूट लटक छन्दक चटकारे शिर घुंघरारे बार ॥
ता पर माल मालती मधुकर मधुकरि करत गुंजार ॥ध्रु॥
अलकन झलक तिलक ललकत चमकत श्रुति कुंडल युगगंड ।
अमल कमल लोहित लोयन घन बरखत धार अखंड ॥
भौंह नटन नासिका निकाई बन्धु अधर सुरंग ।

दमकन दसन हसन आनन छबि बलिबलि कोटि मयंक ॥
कण्ठी कण्ठ माल उर ऊपर पचरंग हार समेत ।
बीच उर बसी जटित लालकल उदित अरुण छवि देत ॥
भुज गजराज सुण्डपर मंडित अंगद वलय सुठौन ।
पहुंचि मुदिरिन करनख मिलि शोभा वरने कविकोन ॥
कटि केहरि पहिरे पट भीनों पटुका बांधि अमेठ ।
चन्दन चरचि ओढ़ि उपरैना दरसत सरस अंगेठ ॥
अरुण चरण नखरावलि रंजन गजन पल्लव राग ।
जुगल जलजदल शेखर मानों राकेश भये दश भाग ॥
बलि पैंजनि ध्वनि सुनि सज्जित अति लज्जित चटक मराल ।
कबहु चपलगति चलत ललित अति मत्तगयंदकी चाल ॥
नित्यानन्द राम सुन्दर पुरुषोत्तम आदिक संग ।
उड़त अबीर गुलाल घुमड में उपजत भाव तरंग ॥
अद्वैत साज समाज कुसुम जल छिरक करत किलकार ।
निरख सगण श्रीवास माधुरी रहत अपनपौ हार ॥
दामोदर नरहरि सहचर मिलि गावत केलि धमार ।
मुख माढ़त भक भोरत वोरत अरगजा सहज संभार ।
निरखि गदाधर आवेशित चित पुलकित नखसिख अंग मुरार ॥

पद नं० ६२

होरी रंग भर गावें सोई खिलार डफलिये बजावें ।
गाय-गाय के रंग उपजावे जोई रीझे ताकों फेर सुनावें ॥
तब अरगजे मरगजे बागे नयन सेन दैं रस उपजावें ।

कहियत नायक दच्छण-लच्छण आप गदाधर नाम कहावें ॥

राग काफी रायसौ पद नं० ६३

सकल कुंवर गोकुलके निकसे खेलन फाग ।
हरि हलधर मध्य नायक अंतर अति अनुराग ॥
ओलन बूका बंदन रोरी हरद गुलाल ।
बाजति मधुर महुवरि मुरली अरु डफ ताल ॥
कनक कलश केसरि भरि कावरि किंकर कंध ।
औरु कहां लग कहियै भाजन मरे सुगंध ॥
लै कुंसुमनि गेंदुक करत परस्पर मार ।
छूटति फैंट लटपटी बिखरि परत घनसार ॥
हँसत हंसावत गावत छिरकत फिरत अबीर ।
भीजि लगे तन शोभत रंगरंग रंजित चीर ॥
कोलाहल ग्वालनकौ सुनि गोपिका अपार ।
टोलनि-टोलनि निकसी करि सोलह शृंगार ॥
रूप माधुरी जिनकी कवि पै कही न जाय ।
जिनहि सची रति रंभा पगहू परति लजाय ॥
अति ही सरस स्वर गावत कोऊ झील कोऊ घोर ।
जिनही सुनत नहीं भावै बीणा नाद कठोर ॥
ललित गली गोकुल की होत विविध रंग खेल ।
अगर सहित कुंकुम के चली धरनि पर खेल ॥
गयौ गुलाल गगन चढ़ि भयौ ब्रज सदन सुरंग ।
मनो खुर खेह उड़ी है सेना सजी अनंग ॥

सीचत हरि नानारंग भाजत गोपिन गात ।
मानों उमगि बसन तैं अन्तर प्रेम चुचात ॥
लगे बनिता वदननिसौं कृष्णा गरके पंक ।
परि पूर्ण चंदनिते मनौ-च्वै चल्यौ कलंक ॥
बोलत ग्वाल बराती हमारे हरिकौ है ब्याह ।
दुलहिनि गोपकिशोरी मोहन सबकौ नाह ॥
सुनि सब गोपी कोपी हलधर पकरे जाय ।
अंजन लै दृग आंजि मुख मृगमद लपटाय ॥
पुनि सबमिलि जुरिआंई पकरे मदन गोपाल ।
कनक कदलि मंडलमै शोभत तरुण तमाल ॥
जब वृषभान दुलारी हरि भरिलीनी अंक ।
कही न जाय ता सुखकी जानौ निधिपाई रंक ॥
कहि न सकै कोऊ हरि के अगणित चरित विचित्र ।
जिहि तिहि भांति गदाधर रसना करउ पवित्र ॥

राग कान्हरौ पद नं० ६४

हो हो हो सब खेलत होरी । मध्य हलधर गिरिधर की जोरी ॥
तैसो यै परी पूर्ण पूर्णमासी । विमल जोन्ह वर्षे सुखरासी ॥
खोरिनि खोरिनि करत कलोलैं । हँसत हंसावत गावत टोलैं ॥
इत ये वदत मनोहर गारी । उत झुमक गावति वृजनारी ॥
उड़ि गुलाल छाई नभबीच । मची अगरसत कुंकुम कीच ॥
चिरजीवउ सुंदर युवराज । युगयुग नन्दराय कौ राज ॥
कहे न जाहि गोकुल के चाय । देखि गदाधर बलि-बलि जाय ॥

राग काफी पद नं० ६५

श्री गोकुल राजकुमार लाल रंगभीने हैं।
खेलत डोलत फाग सखा संग लीने हैं॥
चित्र बिचित्र सुवेष सबै अनुकुले हैं।
राजत रंग सुरंग सरोजसे फूले हैं॥
एकनिकैं करकंज हैं जोरी जराय की।
एकनिकैं पिचकारी है हेम भरायकी॥
कुंकुम घोरि भरे घट हाटकके घने।
पंकज पुंज पराग मृगमदसौं सने॥
ढोलक ढोल निसान मुरुज रुंज बाजहीं।
मैनके मेघ मनौ रस वृष्टिसौं गाजहीं॥
ध्वनि सुनिकैं अकुलाय चली बृजनागरी।
एकते एक महागुण रूपकी आगरी॥
श्रीराधाकैं संग सुहाई अनेक सहेली हैं।
कामके कानन की मानों कंचनवेली हैं॥
वेष बनायेकी भांति न जाति बखानी है।
जेती केती उपमा मनमैं बिलखानी हैं॥
कोकिल कूर कहा स्वर भेदहि जानई।
कुंजर कायर कौन कहा गति ठानई॥
कदलिनि कौ जुस्वभाव परयौ अति कंपकौ।
हेम लयौ हठ नेम सुपावक झंपकौ॥
खंजन कंजसों लागि रहे गति लासतैं।

केहरि कंदर मन्दिर मै दुरे त्रासतैं ॥
पंकमें पकंज मूल रहे छिपि लाजतैं।
नित्य प्रकास बिलास मिट्यौ द्विजराजतैं ॥
ताल पखावज आवज बाजत जंत्र हैं।
गान मनोहर मैनके मोहन मंत्र हैं ॥
सो इतकी उतकी ध्वनि लागैं सुहाई हैं।
मानौं अनंगके आंगन बाजै बधाई हैं ॥
गोकुल खोरीनि गोरीनि खेल मचायौ है।
रंग सुरंग अबीरसौं अंबर छायो है ॥
दृष्टिकरी पिचकारी भरी अनुरागसौं।
जाय लगी बृजराज लला बड़भागसौं ॥
मंजुल हास कपूरकी धूरि उड़ावहीं।
सुन्दरश्याम सुजान के नैन जुड़ावहीं ॥
लाल गोपाल कौ धूधरी में मुखयौं लसै।
प्रात पतंग प्रभा मधि कंचन कंजसै ॥
आइ घिरी अबला सबलाल गोपाल कौं।
हेमलता लपटी मनौ श्याम तमाल सौं ॥
गावति गारीनि नारीन ही झुकि प्रीतकी।
बात बनावति आपनी-आपनी जीतकी ॥
कोऊ गहैं पट पीत कोऊ बन दामकौं।
कोऊ निशंक ह्वै अंक भरै घनश्याम कौं ॥
श्यामके सीससे स्यामाजू केसरि ढोरी है।

दै करतारी हसैं सब हो हो होरी है ॥
एसोई ध्यान सदा हरिको हीयैं जो रहै ।
तौपे गदाधर वाके भागकी को कहै ॥

पद नं० ६६

बाढ्यो अति आनन्द खेलत फाग हरी ।
संग सकल आभीर अरगजा माट भरी ॥
ताल मृदंग उपंग मुरज डफ वेन धुनि ।
जग मोहन मुरली भई छुड़ावत ध्यान मुनि ॥
बाजत पटह निशान अरु कण्ठ ताल धरी ।
वीच मृदुल मुख चंग उपंगन सुरति करी ॥
रतन जटित पिचकारी केसर घोरि भरी ।
उड़त अमित गुलाल अंवरगति अरुनकरी ॥
बोले सुबल श्रीदामा श्रीमुख स्याम कह्यो ।
चलि बरसानैं जांय श्री राधा जाय गहो ॥
गावत अगणित गोप चले सब रंग भरे ।
बोलत हो हो होरी श्रीराधा द्वार खरे ॥
श्रवण सुनत सब नारी द्वारन झुंड भई ।
अनेक अरगजा घोरि सनमुख स्याम रही ॥
धाय गहे बलवीर धीर मन कछु न रही ।
चंदन वंदन रोरी कपोलन लाय गही ॥
दृगसों कज्जल लावति गावति गारी खरी ।
मृगमद चंदन कुंकुम डारत माट भरी ॥

बेनी बनाग्रत सीस हरिजू के हाथ गये ।
श्री राधा बदन निहारत वारत ग्रानद्ये ॥
मोहन दीनी सेन बलदाऊ जाय गये ।
फगुवा देहु मंगाय युवतिनयोंजु कहें ॥
मोहन मनहिं विचारिकें बलिहि ग्रचाय लये ।
जो मांग्यो सो दीनों मोहन मगन भये ॥
ब्रजही चले ब्रजराज गावत रंग भरे ।
देत परस्पर गारि द्वारें जाय खरे ॥
यह लीला रस सिन्धु को कवि वरनि सके ।
दास गदाधर जाय निरखत नयन थकें ॥

पद नं० ६७

रंग हो हो हो होरी खेलैं लाड़िली वृषभान की ।
गोरे गात समात न शोभा मोहनी स्याम सुजान की ॥
ग्ररगजा भरी फवी सारी ग्रति कचुंकी परम सुहावनी ।
वेणी सरस गुही मृगनयनी प्रीतम हित उपजावनी ॥
वारों मृग खंजन ग्रंजन युत नयन बने ग्रनियारे ।
जिनकी तनक कटाच्छ भये वश गिरिधर रूप उजारे ॥
विद्रुम अधर मधुर मृदु-मुसकन बोलन हित रस भीनी ।
लोल कपोल ग्रमोल ग्रलक झलकत पुलकित ग्रति झीनी ॥
श्री मोहनजू के सुखके हित नखसिख भूषण कीनें ।
कंचन मणि रतननसों खचित शोभा प्रति ग्रंगन दीनें ॥
सज सिंगार सुकुमार कुँवरि खेलन निकसी ग्रति सोहे ।

हम न भई सहचरियां कहत लखि सुरबनितनि मनमोहे ॥
संग अलि रस रंगरली एक एकते रूप उजारी ।
ऐसी कौन तरुणी त्रिभुवन में जिन देख न देह बिसारी ॥
एक भरी शोभा सुख बिलसत फूलन की गेंदुक लीनें ।
एक लीनें फूलन की छरी मृगमद केसरसों पटभीनें ॥
एक भरी अनुराग फागलीने पोहोप पराग सुहाई ।
एक लीये है गुलाल बहुवरण वरण एकदाई ॥
कंचनके कलशन केसररंग संगलीयें बहुदासी ।
और विविध रंगलिये सोहत दोहन जहां कमलासी ॥
गावत मिल मधुरेस्वरसों शिवक्रोधदग्धसुनमदन जियो ।
बाणी हूं धरणी धरी बीणा थकित भई गयो मोहि हियो ॥
हसत लसत दरसत मुख शोभा बरषत सुखकी रासी ।
हरि मुखचन्द्र चकोर भई ब्रज युवतिनकी अखियां प्यासी ॥
सुन ध्वनि श्रवण लाल मनमोहन सखन सहित खेलनकूं आये ।
बाढ्यो अतिरसरंग परस्पर भयोहै सबन के मन भाये ॥
दुहुं दिशतें भरभर रंगन छूटी छबिसों बहु पिचकारी ।
भीज लगे बागे अंग अंगन उत भीज लगी अंगनसारी ॥
तब आलीन झारिन भरभर बहु अबीर गुलाल उडायो ।
व्है रही धूंधर सुगन्ध महा भई धरणी अरुण अम्बर छायो ॥
बाजत विविध पखावज आवज बहुरुंज मुरज डफ ताल घने ।
लटक लटक अंसन भुज धरधर नाचत गावत ग्वाल बने ॥
भरत भरावत रस उपजावत भाजत राजत भांत भले ।

मार करे नवला कमलासी भांमिनि भ्रूंह नचाह चले ॥
छिरकत नवल वधू नव रंगन नवल लाल तन मन हुलसे ।
मानो नवलप्रेम वेलिनपर नवलनीर नीरद वरषे ॥
मृगमदभर पिचकारी लाल प्यारीजू सरससनेह नए ।
भीजेचीर लागे अंगन अंगन अवलोक सरससुख नयन लए ॥
तब दौरि गुलाल घूंधर कर जे चितवत चित्त विचित्र करखे ।
घेर लिये घनश्याम भामिनी दामिनींसीं तन मन हरखे ॥
एक अरगजा मांडत मुख सुख भर आंजत लोचन छविमा ।
एक मांगत फगुवा भुज-गह-गह मो छवि कहि न परत कविसों ॥
कहि न परे उर अति सनेह भयो प्रकट कुसुम जल विमल लियो ।
केसर घोर प्रिया पिय ऊपर डारत उठ्यो हुलास हियो ॥
विहस उठी दे ताल सखी सब कहत भई हो हो होरी ।
गदाधर प्रभु यह सदा विराजो गोरस्याम सुंदर जोरी ॥

पद नं० ६८

चलोरी होरी खेलें नंदके लालसों ।
रंग रंगीलो छैल छवीलो मोहन मदनगोपालसों ॥
मृगमद अबीर अरगजा केसर फेंट जुभरी हे गुलालसों ।
रुंज मुरज आवाज बाजें रंग रह्यो करतालसों ॥
छिरकत भरत परस्पर सब मिल लाल हसत ब्रजलालसों ।
चंद्रावलि वलि रामसुख मांड्यो लटकत गजगति चालसों ॥
राधाजू अचानक आयगहे हरि वेंदी लागी भालसों ।
विप्र गदाधर मुख सुख निरखत सुख पायो दीनदयालसों ॥

राग पंचम पद नं० ६९

देखो देखो ब्रजकी बीथनि बीथिनि खेलत हैं हरि होरी।
गीत विचित्र कोलाहल कौतुक संग सखा लख कोरी॥
आईं झूमि झूमि झुंडन जुरि अगनित गोकुल गोरी।
तिनमें जुवती कदम्ब शिरोमनि राधा नवल किसोरी॥
छिरकत ग्वालबाल अबलन पर बूका वंदन रोरी।
अरुन अकास देखि संध्या भ्रम पुनि मनसा भई बौरी॥
रपटत चरन कीच अरगजा की केसरि कुंकुम घोरी।
कही न जाय गदाधर पै कछु बुधिबल मति भई थोरी॥

राग काफी पद नं० ७०

मिलिखेले फाग वनमें वल्लव बाला।
संगखरे रसरंगभरे नवरंग त्रिभंगी लाला॥
बाजत बांसरि चंग उपंग पखावज आवज ताला।
गावत गारी देदे ब्रजनारि मनोहर गीत रसाला॥
सीचत रंगनि अंग भरे वढ्यो प्रेम प्रवाह विसाला।
मैन सैन खुररेनु उड़ी नभ छायो अबीर गुलाला॥
कंचन बेलि करे जनु केलि परी बीच श्यामतमाला।
धाइ धरे हँसि अंक भरे छुटे केश टूटि उरमाला॥
देखि थकी भँवरी सबरी मृगि मोरि चकोरिनि जाला।
राधिका कृष्ण विलास सरोवर गदाधर मानो मराला॥

पद नं० ७१

रगमगे स्यामल अंग रगमगी कुंकुम खोरी।

रगमगी पाग सुरंग रगमगी पीत पिछोरी ॥
पवन परसि फहरात चन्द्रिका रंग बिरंगी ।
दृष्टि नहीं ठहराति देखत अतिहु विचंगी ॥
बदन सदन आनन्द कहुं उपमा नहि पैयै ।
वारत कोटिक चंद मनमें अधिक लजैयै ॥
झलकत अलक ललाट तिय जियकी फंदवारी ।
तिलक काम की बाढ़ जनु विधि आप संवारी ॥
सोंहैं भोंहें अराल मैं अलि पंगति जानी ।
लोचन लोल विसाल सुन्दरताकी रजधानी ॥
कुंडल मकराकार जगमग जगमग जोती ।
सुन्दर सजल सुढार सोहत नासाको मोती ॥
दसन बसन सुरसाल हसनि लसनि सुखदाई ।
दसन घसन सुरसाल उपमतउनपाई ॥
दुलरी कनक सुकान्ति नातर चंपकली है ।
उर पदकनिकी पांति राजत भांति भली है ॥
गज मोतिन को हार सोभा सुखद सुहाई ।
नील धरापर धार सुरसलिता की जनु आई ॥
भुज भुजंग अंगद छबि पौंचिनि के फुंदन ।
करि विचार हारे कवि जे सब उपताके पुंदन ॥
कटि पट कनक किंकिनी रनझन-रनझन बाजैं ।
पग नूपुर धुनि सुनि-सुनि कलहंसनि कुल लाजैं ॥
अंग-अंग अनुपम भांति बानक बनी चटकीली ।

मद गयंद दुरिजात देखत गति लटकीली ॥
उपजत अगनित भांय व्रजजन नैंन सुखदीनों ।
मुरली मधुर बजाइ सब जगु बसकरि लीनों ॥
ऐसो रूप अनूप नैंननि देख्योई भावै ।
सकल फनीगनभूप वरनत अन्त न पावै ॥
मेरी मति अतिथोरी वरनत अतिहि अपार ।
तदपि गदाधर गावत उपजत आनन्द की धार ॥

राग गारी पद नं० ७२

सुन्दर स्याम सुजान सिरोमनि देऊँ कहा कहि गारीजू ।
बड़े लोगके औगुन बरनत सकुच होत जिय भारीजू ॥
को करिसके पिताको निर्णय जाति-पांति को जानेंजू ।
जिनके जिय जैसी बनि आवे तेसी भांति बगानेंजू ॥
माया कुटिल नटी तन चितयो कौन बड़ाई पाईजू ।
उन चंचल सब जगत विगोयो जहां तहां भइ हंसाईजू ॥
तुम पुनि प्रकट होइ बारे ते कौन भलाई कीनीजू ।
मुक्ति वधू उत्तम जन लायक ले अधमन कों दीनीजू ॥
बासि दस मास गर्भ माता के उन आसा करि जायेजू ।
सो घर छांडि जीभ के लालच ह्वै गये पूत परायेजू ॥
बारहीते गोकुल गोपिन के सूने गृह तुम डाटेजू ।
ह्वै निसंक तहां पैठि रंकलौं दधिके भाजन चाटेजू ॥
आपु कहाय बड़ेके ढ़ोटा भात कूपनलौं माग्योंजू ।
मान भंगपर दूजैं जाचत नैंकु सँकोच न लाग्योंजू ॥

लरिकाईते गोपिनके तुम सूने भवन ढँढोरेजू ।
जमुना न्हात गोप कन्यन के निपट निलज पट चोरेजू ॥
बेनु बजाय विलास कियो बन बोलि पराई नारीजू ।
वे बातें मुनिराज सभामें ह्वै निसंक विस्तारीजू ॥
सब कोउ कहत नन्दबाबा को घर भरयो रतन अमोलेजू ।
गरेगुंजा सिरमोर पंखौवा गायनके संग डोलेजू ॥
राज सभा को बैठन हारो कोन त्रियन संग नाचेजू ।
अग्रज सहित राजमारग में कुबिजा देखत राचेजू ॥
अपनी सहोद्रा आपुही छलकरि अर्जुन संग भजाईजू ।
भोजन करि दासी सुत के घर जादों जाति लजाईजू ॥
लै लै भजे राजन की कन्या यह धों कोन भलाईजू ।
सत्य भामाजू गोत में ब्याही उलटी चाल चलाईजू ॥
बहिनि पिताकी सास कहाई नैकहु लाज न आईजू ।
एते पर दीनीजु विधाता अखिल लोक ठकुराईजू ॥
मोहन वसीकरण चट चेटक जंत्र मंत्र सब जानेंजू ।
तातें भले भले करि जाने भलें भलें जगमानेंजू ॥
वरनौं कहा यथामति मेरी वेदहू पार न पावैजू ।
भट्ट गदाधर प्रभुकी महिमा गावत ही उर आवैजू ॥

अथ वर्षा ऋतु वर्णन—राग मलार पद नं० ७२

हरिकी नवघन करत आरती ।
गर्जनि मंद शंख ध्वनि सुनियत दादुर वेद भारती ॥
पचरंग-पाट वाति सुर धनुकी दामिनी दीप उज्यारती ।

जल कन कुसुम जाल वरषावत बग-गण चमरनि ढ़ारती ॥
घंटा ताल झांझि झालरि पिकचातक केकी क्वान ।
तातैं भयौ गदाधर प्रभुके श्यामल अंग समान ॥

राग मलार पद नं० ७४

देखो हरि पावस वधू बनी ।
साजि सिंगार अंग अंगनि प्रति तुमसों सनेह सनी ॥टेक॥
सघन घटा घूंघट में चपला चपल कटाछ विलास ।
ढरकि रहे धुरवा अलकावलि बग पंगति मृदुहास ॥
जलकनधार हार मोतिन के विपिन वसन पहिराउ ।
ठौर ठौर सुर चाप सुरंग छबि जगमगि रह्यो जराउ ॥
कुसुम कदम्ब सुगन्ध वदन कौ लागत अधिक सुहायो ।
चंद्रवधू रुचि रुचिर विराजत चरण महावर लायौ ॥
दादुर मोर सोर चातक पिक सुनियत भूषन राउ ।
उपजैं क्यौंन गदाधर प्रभुकें मन मनसिज-रस भाउ ॥

राग मलार पद नं० ७५

सुखद वृन्दावन सुखद यमुनातट सुखदकुंज भवन रच्यौ है हिंडोरौ। सुखद कलपतरु सुखद फूलफल सुखद बहत सीतल पवन झकोरौ ॥ सुखद रंगीले संग सुखद रंगीली राधा सुखद करत केलि रतिपति जोरौ । सुखद सखी झुलावैं सुखद गीत गावैं सुखद गरज बरसत थोरौ थौरौ ॥ सुखद हरित भूमि सुखद बूंदनि रंग सुखद कोकिला कल सारस चकोरौ । सुखद बजावैं बैंन सुखद सुजस सुनि सुखद गदाधर चितकौ चोरौ ॥

राग धल्लासी झुलन के पद नं० ७६

झूलहिं कुंवरि गोपरायिनकी मध्य राधा सुन्दरि सुकुमारि ॥ध्रु॥
प्रथमहि ऋतु पावस आरम्भ । श्रीवृषभान मंगाये खंभ ॥
काढ़ि भवनतै रत्न अमोल । रचि पचि रुचिर रच्यो हिंडोल ॥
वर्ण वर्ण चूनरी सुरंग । फबी लोने सोनैंसे अंग ॥
राजत मणि आभरण रमणीय । जुही गुही कबरी कमणीय ॥
एक ते एक सुभग सुकुमारि । मनऊ रची विधि कुंकुमगारि ॥
जगमगाति नव यौवन ज्योति । निरखि नैन चकचौंधी होति ॥
गावति सुघरि सरस स्वरगीत । डुलरावति मनमोहन मीत ॥
प्रेम विवश भई सकति न गाय । उमग्यौ आनन्द उर न समाय ॥
दुरि देखत गोकुल कुलराय । शोभा निरखत मन न अघाय ॥
मुदित गदाधर नन्दकिशोर । लोचन भये भरे के चोर ॥

राग मलार पद नं० ७७

रंग हिडोंलना मिलि झूलत ये फूलत दोऊ मनही मन ॥ध्रु॥
अरुण-पीत वर-वसन विराजत अति गोरैं सावरैं तन ।
वर्ण-वर्ण सारी सुरंग शोभित गावैं आसपास युवती जन ॥
तैसीयै दामिनी दमकति छिनहिं छिन तैसे दिशदिश उमड़े घन ।
तैसी ये मंदमारुत झकोर मोर-पिक चातक चर-चर वन ॥
जब हरि हरषि देत झोटा बोलैं विहसि प्रिया हाहा नन ।
संभ्रम सहित गदाधर प्रभु हृदै लाय लई जीवन धन ॥

राग देवगंधार पद नं० ७८

झूलत नागरि नागरलाल ।

मंद-मंद सब सखी झुलावति गावत गीत रसाल ॥
फरहराति पट पीत नीलकें अंचल चंचल चाल ।
मनहुँ परस्पर उँमगि ध्यान छबि प्रकट भई तिहि काल ॥
सिल सिलाति अति पिया सीसतैं लटकति बेनी नाल।
जनु पिय मुकुट बरहि भ्रम वस तहँ व्याली विकल बिहाल ॥
मल्ली माल पियाजू की उरझी पिय तुलसी दलमाल ।
जनु सुरसरि तरुनितनया मिलि के सुख श्रेणी मराल ॥
शामल गोर परस्पर प्रति छबि सोभा विशद विशाल ।
निरखि 'गदाधर' कुंवरि-कुंवर कों मन परयौ रस जंजाल ॥

राग रायसौ पद नं० ७६

श्रीवृन्दावन-कुंज में झूलत युगलकिशोर ।
मधुर-मधुर स्वर गावही प्रेम सहित व्रजगोरि ॥
कुसुमन लता सुहावनी बोलत कोकिल मोर ।
मधुप मधुर गुंजारत चहुँ दिश दादुर शोर ॥
मन्द वृष्टि जलधर करें मलयज पवन झकोर ।
झूलत अति आनन्द भरि शोभित सुन्दर जोर ॥
रीझ देत वृषभानुजा पियके प्रान (उरज) अकोर ।
शोभा निरखत गदाधर मुदित उभय कर जोर ॥

राग मारू पद नं० ८०

निज सुख पुंज वितान कुंज हिंडोरना झूलत स्याम सुजान ।
संग स्यामाजू परम प्रवीन, जाकें सदां रसिक आधीन ॥ध्रु॥
कंचन खंभ पेच जगमग जटित जराऊ सगरी ।

पन्ना खचित पिरोजा बिच बिच कनक कलश जगमगरि ॥
गज-मोतिन सों डांडी गूंथी चौकी चमक सुरंगी ।
रमकत झमकत गहगह लटकत मोहन मदन त्रिभंगी ॥
मरुवे बेलन ध्वजा झालरी द्युति गहवर विस्तरणी ।
चोकास्त झोटन में मानों कोकिल शब्द उच्चरणी ॥
चहूं ओर द्रुम वेली फूली लता सघन गम्भीर ।
जब रमकत दमकत दामिनि सी झलमल यमुना नीर ॥
सारस हंस चकोर चातक पिक नेह धरे सब पैठे ।
गुल्मलता द्रुम तनक न दीसत ऐसे जुर जुर बैठे ॥
विजय सुभाव किये घन संपति उल्हर विपिन पर आए ।
गरजत तरजत मदुर राग लिये केकी शब्द सुहाए ॥
सहचरी गान करत ऊँचे स्वर श्री वृन्दावन गाजें ।
मधुर मंजीर गगन उघटत सम सुभट पखावज बाजें ॥
नीलाम्बर पहिरे नव नागरि लाल कंचुकी सोहें ।
भीज गई श्रम जलसों उरजन प्रीतम को मन मोहें ॥
लट सगबगी सलोल बदन पर सीस फूल उलटानों ।
प्रिया की चौकीसों गिरधर को चंद्रहार अरुझानों ॥
दृग रसाल रस भरी भौंह सों हँस हँस अर्थ जनावे ।
दुरन मुरन में चित करषत है लालची मन ललचावे ॥
फैल रह्यो सौरभ सर.रें सखी कुंकुम कृष्णागर को ।
कहाँ लों कहों मत्त भयो वरनो भाव गदाधर उरको ॥

पद नं० ८१

राधेजू झूलत रमक रमक।
मणि कंचन को सुरंग हिंडोरो तामध्य दामिनि चमक चमक॥
गावत गुण गिरिधरण लाल के उठत दशन छबि दमक दमक।
बाढ्यो रंग गदाधर प्रभु जहाँ गयो है मदन सब तमक तमक॥

पद नं० ८२

चलो तो देखन जैये नंद के भवन।
हिंडोरे झूलत प्यारी राधिका रमण॥
पावस प्रवल ऋतु अति सुखदाई।
थोरी थोरी बूँद बरसैं नव घन माई॥
झुलावत झोटा देदे पग पगसौं प्राणेश।
वाल सुकुमारि डरपे लघु वधू-वेश॥
हरें हरें झूलो हरि बाला बोली आन।
कुंवरि रीझ के देत मुख बीरी पान॥
यह सुख देख देख सखी सुख पावैं।
कवि को वरण सके गदाधर गावै॥

राग धनाश्री पद नं० ८३

हिंडोरना झूलत युगल किसोर। हिंडोरना राजत जोवन जोर॥
अगणित मणि माणिक लागे। जाहि निरखि नैंन अनुरागे॥
ऊपर चन्द्रातप तानें। वे मैं उनए घन जांने॥
पचरंग पाट झवा तह झूले। जनु रंग रंग पंकज फूलै॥
मोतिन के लटकन लटकें। लखि लजित नक्षत्र गन सटकें॥

चपल झुलमुली झलकैं । देखत नहिं लागत पलकैं ॥
मनि चौक रचे वर धरनी । वह सोभा जात न वरनी ॥
मृदु पवन उड़ति रज रूरी । कुंकुम कपूर कस्तूरी ॥
कुसुमित उपवन चहुँपासा । रस भूले भंवर सुवासा ॥
तहँ कीर कपोत कलापी । मृदु बोलत मधुरालापी ॥
तहँ यूथ यूथ व्रजनारी । जनु कुंकुम गारि संवारी ॥
वे मधुर मधुर कल गावैं । कुंवरि कुंवर कौं झुलावैं ॥
दंपति मुख शोभा देखैं । लागति नहिं नैन निमेषैं ॥
जब झूलें थोरें थोरें । आवै सुभग सुगन्ध झकोरैं ॥
पट नील-पीत फहरांही । जनु घन दामिनी नृत्य करांही ॥
सुर–ललना फूलनि वरसें । वे ढिग आवन कों तरसैं ॥
रँगु बढ्यौ अति भारी । तन की गति सबनि बिसारी ॥
गुन गाइ गदाधर जीजै । मनु प्रेम रंगसों भीजै ॥

राग मलार पद नं० ८४

रंग हिंडोरना मन मोह्यो ।

सहज वृन्दाविपिन पावस सदा आनन्द केलि ।
जहाँ सघन द्रुम घटा घन सौदामिनि कंचन-वेलि ॥
कुसुम किसलय सुरंग सुर धनु मन्द पवन झकोर ।
तहाँ नदत गह-गह कण्ठ भरि कलकंठ चित्रक मोर ॥
मनि नील धरनि किरनि नव तृण निरखि मुदित कुरंग ।
थल कमल छल छत्राक बिच बिच बूट विद्रुम भंग ॥
भ्रमत अलि मद अंध विविध सुगंध लहरि अपार ।

तहँ कलित ललित हिंडोरना कल कल्पद्रुम की डार ॥
खचे मनि मानिक महा-घन रचे चित्र विचित्र ।
देखिबे को किये अनिमिष नैन रसिकन मित्र ॥
झलमलत झलमलनि मोती मनहुँ आनँद नीर ।
तिहि निरखि सुर मुन हार कोटिक लजे तजि मन धीर ॥
तहँ कुँवर कुँवरि बिलास सागर झूलत रस आवेस ।
तन बनी सुरंग कसूँभि सारी पीत बसन सुदेश ॥
नवल जोबन जोति जगमग गौर स्यामल इन्दु ।
लाड़िली वृषभानु की ब्रज कुँवर वर गोविन्दु ॥
आस पास विलासनी गन चपल चितघनि चोज ।
मनु मदन वन की लता लहलहि रही फूलि सरोज ॥
वै निपुन बीना वेनु लाल प्रमान गान विधान ।
बलि गदाधर स्याम स्यामा चरन प्रद कल्यान ॥

पद नं० ८५

निकसि ठाढे सिंह पौरि । पिय सहचर कर पकरि ॥
सुरंग पाग वाम भाग रही धसि सुरंग तमोर ।
वदन सोभा तन बनी है सुरंग कुंकुम की खौरि ॥
पवन झकोर छोर कटिपट के लटकि लटकि लहरें ।
सीलेत देखे परी तन मन मनसिज की रौरि ।
यदपि चली बचि सकुचि सखी मोही,
मुकुन्द कहा करौं कल्यान दृग लगी दौरि ॥

❀ समाप्तेयं बाणी ❀

पाठ-पूजा एवं भजन कीर्तन की पुस्तकें

दृष्टान्त महा सागर (३००)	१।।)	गोपाल चालीसा	-)
मोहन मोहिनी (गो०बिन्दूजी)	१)	हरिसंकीर्तन सुधा	=)
ब्रज विलास बड़ा-सजिल्द	६)	ब्रज माहात्म्य	-)
गीत गोविन्द—भा० टी०	१)	मीरावाई के भजन	=)
गोपालसहस्र० मूल मोटा टा०	।)	सूरदास के भजन	=)
गोपल सहस्रनाम भा० टी०	।।)	चन्द्रसखी के भजन	=)
राधा सहस्रनाम मूल	।)	कृष्ण—कीर्तन	=)
राधा स्तोत्र मूल	-)।।	सूरश्याम कीर्तन	=)
ब्रज की रङ्गीली होली	=)	मधुर कीर्तन	=)
सुख सागर हिन्दी भाषा	६)	फिल्मी कीर्तन	=)
रामायण सटीक बड़ी	८)	रासलीला कीर्तन	=)
सनेह लीला (सनेहीरामजी)	।।।)	मोहन कीर्तन	=)
गीता भाषा (लाहौरी)	१)	हरि कीर्तन	=)
प्रेम—सागर (हिन्दीं भाषा)	२)	रसीले कीर्तन	=)
सत्यनारायण कथा हिन्दी	≡)	ईश्वर प्रार्थना	=)
वृन्दावन महात्म्य	-)	वंशी की तान	=)
ब्रज के रसिया	-)	भजन प्रभाती	=)
आरती संग्रह	=)	भक्ति—सागर	≡)

पता—राधेश्याम गुप्ता बुकसेलर, पुरानाशहर वृन्दावन।

श्री माध्वगौड़ेश्वर सम्प्रदाय के प्रकाशित

ब्रजभाषा में प्राचीन–ग्रन्थ

१–माधुरी वाणी	(माधुरी जी कृत)	॥=)
२–वल्लभ रसिक की वाणी	(वल्लभ रसिक जी)	।=)
३–गीत गोविन्द पद	(श्री रामराय जी)	।)
४–गीत गोविन्द	(रस जानि वैष्णवदास जी कृत)	।)
५–हरिलीला	(ब्रह्म गोपाल जी कृत)	।)
६–श्री चैतन्य चरितामृत	(सुवल श्याम जी कृत)	४॥)
७–भक्त नामावली	(वृन्दावनदास जी कृत)	=)
८–विलाप कुसुमाञ्जली	(,, ,,)	।)
९–प्रेम भक्ति चन्द्रिका	(,, ,,)	।)
१०–प्रियादास जी की ग्रंथावली	(प्रियादास जी)	।=)
११–गौराङ्ग भूषण मञ्जावली	(गौरगनदास जी कृत)	।)
१२–राधारमण रस-सागर	(मनोहर जी कृत)	।)
१३–श्री राम हरि ग्रंथावली	(श्रीरामहरि जी)	।=)
१४–भाषा भागवत (दशम, एकादश, द्वादश स्कन्ध)	(श्री रसजानि वैष्णवदास जी कृत)	१)
१५–श्री नरोत्तम ठाकुर महाशय की प्रार्थना	(ब्रजभाषा में)	॥)
१६–सम्प्राय बोधिनी	(कविवर मनोहर जी कृत)	=)
१७–व्रज मंडल दर्शन	(परिक्रमा)	१)

सानुवाद संस्कृत भाषा में—

१–अर्चा विधि	(संग्रहीत)	।)
२–प्रेम सम्पुट	(श्री विश्वनाथ चक्रवर्ती)	।)
३–भक्ति रस तरङ्गिनी	(नारायण भट्ट जी कृत)	१)

४–गोवर्धन शतक (श्री केशवाचार्य कृत) ।)
५–चैतन्य चन्द्रामृत और सङ्गीत माधव
(श्रीप्रबोधानन्द सरस्वती जी कृत) १।)
६–नित्य क्रिया पद्धति (संग्रहीत) ॥=)
७–ब्रजभक्ति विलास (श्रीनारायण भट्ट जी कृत) २॥)
८–निकुञ्ज रहस्य स्तव (श्रीमद् रूपगोस्वामी कृत) ।)
९–महाप्रभु ग्रन्थावली (श्रीमन्महाप्रभु कृत) ।–)
१०–स्मरण मङ्गल स्तोत्रं (श्रीमद् रूप गोस्वामी जी कृत) ॥=)
११–नव रत्नं (श्री हरिराम व्यास जी कृत) =)।
१२–ब्रह्मसूत्र गोविन्दभाष्यं (बल्देव विद्याभूषण जी कृत) ४॥)
१३–ग्रन्थ रत्न पञ्चकम् १॥)
१. श्रीकृष्णलीला स्तवः (श्रीपाद सनातन गोस्वामि कृतः)
२. श्री राधाकृष्ण गणोद्देश दीपिका (श्रीश्रीरूपगोस्वामि कृतः)
३. श्री गौर गणोद्देश दीपिका (श्री कवि कर्णपूर जी कृतः)
४. श्री ब्रज विलास स्तवः (श्री रघुनाथदास गोस्वामि कृतः)
५. श्री संकल्प कल्पद्रुमः (श्री विश्वनाथ चक्रवर्ती जी कृत)
१४–श्रीमहामन्त्राव्याख्याष्टकम् (संञ्चित) ।)
१५–ग्रन्थ रत्न शटकम् ॥)
१६–श्री गोवर्धन भट्ट ग्रंथावली ॥।)
१७–सहस्र नामत्रयम् अथवा ग्रन्थ रत्न नवकम् ॥)
१८–श्रीनारायणभट्ट चरितामृतम् (श्रीजानकीप्रसाद गो० कृत) ॥)
१९–उद्धव सन्देश (श्रीमद्रूप गोस्वामी कृत) ।=)
२०–हंस दूतम् (,, ,,) २॥)
२१–मथुरा माहात्म्यम् (,, ,,) ॥=)

पता–राधेश्याम गुप्ता बुकसेलर, पुराना शहर वृन्दावन ।

❀ हमारी विशेषताएँ ❀

१—गीता प्रेस चित्रावली साइज १५×२० नं० १, २, ३ मिलती हैं।

२—श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्ती कृत भक्तिग्रन्थ-माला तथा श्रीसूरदास विल्व-मङ्गल कृत (कृष्णकर्णामृत) टीका सहित मिलते हैं।

३—श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय के प्रकाशित ग्रन्थ सभी मिलते हैं।

४—श्रीगौड़ेश्वर सम्प्रदाय के भाषानुवाद सस्कृत व व्रजभाषा के बाबा कृष्णदास जी द्वारा प्रकाशित सभी ग्रन्थ मिलते हैं।

५—श्रीमहावाणीजी, युगल-शतक, सेवा-सुख एवं सिद्धान्त-सुख मिलते हैं।

६—"श्रीसर्वेश्वर" धार्मिक मासिक-पत्र विशेषाङ्क सहित मिलते हैं, तथा ५) चन्दा जमा करके वार्षिक ग्राहक भी बनाते हैं।

७—पं० रामानन्दजी कृत श्रीचैतन्य प्रेम-सागर सात-खण्डों में अनेक रंगीन चित्रों सहित हमारे यहाँ मिलता है।

८—रसिया माधुरी स्वामी प्रेमानन्दजी कृत मिलती हैं।

९—रासलीलाएं तथा प्राचीन वाणी हमारे यहाँ मिलती हैं।

१०—रसिक पदावली (संग्रह कर्ता श्रीकमलदासजी) की मिलती है।

११—कल्याण के अप्राप्त प्राचीन विशेषाङ्क तथा फाइलें उचित मूल्य पर खरीदे तथा बिक्री किये जाते हैं कुछ स्टाक में भी हैं।

१२—श्री स्वामी मेघश्याम जी कृत—(रसिया श्याम) तीनों भाग, श्याम-भ्रमर आदि सभी पुस्तकें मिलती हैं।

१३—स्वामी श्रीकुंवरपाल जी कृत रसिया रस-विहार मिलता है।

१४—रसिया रासलीला—पं० कल्याणप्रसाद 'किशोरी' कृतमिलता है।

नोट—उपरोक्त बातों का विवरण जानने के लिये बड़ा सूची-पत्र देखें।

हमारी प्रकाशित अन्य पुस्तकें

१. **कृपा कटाक्ष स्तोत्र**–(नया संस्करण) श्रीराधा व श्रीकृष्ण कटाक्ष स्तोत्र, श्रीराधाकवच टीका सहित मोटे टाइप में । न्यं

२. **कृपा कटाक्ष स्तोत्र**–श्रीराधा व श्रीकृष्ण कृपा कटाक्ष स्तोत्र टीका सहित । न्यौछावर ग्लेज कागज ≡) र

३. **वृन्दावन के सवैया**–श्री बांकेविहारी जी के मन्दिर में गाये बाले व्रजभाषा के प्राचीन १२० सवैया हैं । न्यौछाव

श्री स्वामी मेघश्याम जी कृत

४. **रसिया श्याम**–(प्रथम भाग) रसिया १४ । न्यौ० ग्लेज ।=)

५. **रसिया श्याम**–(द्वितीय भाग) रसिया ५१ । न्यौ० १) मा

६. **रसिया श्याम**–(तृतीय भाग) रसिया ११२। न्यौ० ग्लेज २।।

श्री किशोरी अली जी कृत

७. **श्री राधिका नामावली**–व्रजभाषा के ६६ दोहा । न्यौ० =

श्री नारायण स्वामी जी कृत

८. **श्रीकृष्ण प्रेम चालीसा**–व्रजभाषा के चालीसा दोहा । न्यौ

नई पुस्तकें छप रही हैं

१. **मधुर-रस-सरोवर**–श्री नन्ददास जी की पदावली, रासपं एवं भ्रमर गीत टिप्पणी सहित ।

२. **वसन्त सौरभ**–वसन्त के पद, रसिया, कवित्त, सवैयों का में प्राचीन संग्रह ।

३. **रसिकों की व्रज की होरी**–रसिया, कवित्त, सवैया व पद

४. **श्री विहारी जी की कवित्त माला**–श्री विहारी जी के प्रा भाषा के कवित्तों का संग्रह ।

५. **श्री विहारी जी के सवैया**–(द्वितीय खंड) सवैया संग्रह

पता–राधेश्याम गुप्ता बुकसेलर, पुराना शहर वृन्दा